

कागज़ की नाव

लेखक :

श्री प्रताप चन्द्र आजाद

एम०ए०, एल०एल०बी०, एडवोकेट

प्रकाशक :

सेवा सदन प्रकाशन

लखनऊ।

मुद्रक--स्वराज्य पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, बरेली।

स० १९७० ई० मूल्य

प्रकाशक का दृष्टिकोण

आजाद साहब की कहानियों का यह मानवा संग्रह 'कागज की नाव' के शीर्षक से प्रथमबार पाकेट बुक की प्रकार प्रकाशित हो रहा है। इससे पूर्व उनकी कहानियों के छ संग्रह मोटी जिल्द बन्द पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हुये है। निसन्देह आजाद साहब की कहानियों ने समाज में एक उथल पुथल मचादी है और इसीलिए कई साहित्यकारों ने उनकी कहानियों को राष्ट्रनिर्माण की एक कड़ी बताया है। उन्होंने अपनी कहानियों में, गरीब, लाचार और दबे हुये व्यक्तियों के अन्धकारमय जीवन मे आशा का चिराग जलाकर वर्तमान सामाजिक और राजनैतिक बुराइयों को जनता के सामने रखखा है।

उनकी कहानियों के संग्रह के अतिरिक्त उनके कुछ ऐसे महत्वपूर्ण प्रकाशन भी है जिन्होंने भारतीय साहित्य में चार चाद लगा दिये है। जैसे (१) १८५७ की क्रान्ति रुहेलखण्ड (२) दक्षिण भारत की कला संस्कृति एव सभ्यता का इतिहास (३) विदर पाकिस्तान [अंग्रेजी] (४) इन्तखाब इन्क़लाबे वतन [उर्दू] (५) हम आजाद हुये (६) हमारे राष्ट्र निर्माता। उनमें से दो पुस्तकें जिन्दगी बला और फिलसफये मुहब्बत जो आज से लगभग बीस वर्ष पहिले प्रकाशित हो चुकी है अब बाजार मे उपलब्ध नही हैं।

उनके साहित्य एव उनकी कहानियों के संग्रह के सम्बन्ध मे कुछ प्रसिद्ध साहित्यकारो, विद्वानो एव समाचार पत्रों के विचार पाठकों के समक्ष रख रहे है।

श्री अनन्त शयनम आयंगर, राज्यपाल बिहार

भूतपूर्व अध्यक्ष लोकसभा

बिहार गवर्नर कैम्प, रांची

अगस्त १३ १९६५

मुझे श्री प्रताप चन्द्र आजाद द्वारा लिखित पुस्तक 'दक्षिण भारत की कला, संस्कृति एवं सभ्यता का इतिहास'' पढ़ने का अवसर मिला। इस प्रकार की पुस्तकों की आजकल नितान्त आवश्यकता है। ऐसी पुस्तकें राष्ट्रीय एकता के लिए उपयोगी हैं। उत्तर दक्षिण के लोगों की महानता को परस्पर सद्भावना के साथ समझने से ही एक दूसरे को निकट ला सकती है। एक दूसरे के प्रति प्रतिष्ठा और श्रद्धा, एक दूसरे की महानता को अनुभव करके ही उत्पन्न हो सकती है। उत्तर भारत से बहुत से व्यक्तियों को दक्षिण भारत में जाकर उनकी संस्कृति को समझने का अवसर नहीं मिल पाया है। इसी प्रकार दक्षिण के बहुधा व्यक्तियों को उत्तर की संस्कृति के समझने का अवसर नहीं मिल पाता है। यह स्पष्ट है कि समस्त भारत में केवल एक ही संस्कृति कुछ स्थानीय परम्पराओं के साथ प्रचलित है।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक उत्तर और दक्षिण के छोटे मोटे भाषा के भेद भावों को दूर करके समस्त भारत को एक सूत्र में बांधने में सफल होगी और नवीन ढंग से एक दूसरे के प्रति बड़ी से बड़ी सद्भावना उत्पन्न करेगी।

एम० अनन्त शयनम आयंगर

७ विधान सभा मार्ग
लखनऊ ।
२० जुलाई, १९६५

प्रिय आजाद,

आपकी भेजी "दक्षिण भारत की कला, संस्कृति एवं सभ्यता का इतिहास" नामक पुस्तक मिली। मुझे कई बार भारत के दक्षिणी खंड में भ्रमण करने का अवसर मिला जहां मैंने प्रत्येक वस्तु को निकट से देखा और जनसमुदाय की विचारधारा और भावनाओं को समझने का प्रयत्न किया।

चित्रों के बाहुल्य ने पुस्तक को बड़ा आकर्षक बना दिया जिनको देखने से कला का सजीव चित्र आँखों के साथ हृदय को आकर्षित करता है और पढ़ने से जानकारियों का भण्डार खुल जाता है।

बधाई।

भवदीय—
दरबारी लाल शर्मा
अध्यक्ष विधान परिषद

वाइस प्रेसीडेण्ट, इण्डिया नई दिल्ली। १७ जुलाई, सन् १९६२

मुकर्रमी बन्दा आजाद साहब,

कई हफ्ते हुए आपके अफसानों का मजमुआ (संग्रह) "जमाने की आंख" मुझे मिला था। उसके साथ कोई खत नहीं था। इसलिये सही अन्दाजा नहीं कर सका कि आपके नाशिर (प्रकाशक) ने यह किताब मुझे भेजी है। या अजराहे करम आपने मुझे भेजी है। बहरहाल इस ख्याल से कि शायद आपने भेजी है, यह खत आपकी खिदमत में भेज रहा हूँ और बहुत शुक्रगुजार हूँ कि आपने इस तरह याद फरमाया।

इस किताब के सब अफसाने अभी नहीं पढ़ सका हूं, और जो पढ़े हैं वह बहुत पसन्द आये। मुझे उम्मीद है कि आप और भी अच्छे-अच्छे अफसाने लिखेंगे।

मैं फिर एक बार आपका दिली शुक्रिया अदा करता हूँ।

मुखलिस—
जाकिर हुसैन

Raj Bhavan
BHOPAL
18 July 1965

No 2860/W

To,

Shri P C. AZAD, M. A., LL. B-,
Adhyaksh, Zila Parishad, Bareilly.

Dear Sir.

I am directed to acknowledge with thanks the receipt for the Publications 'Dakshan Bharat Ki Kala Sanskrit Evam Sabhita Ka Ithas" which you have so kindly sent to the Governor. I am also asked to convey to you the Governor's appreciation of your very interesting and informative book.

Your faithfully.
C. S. Gadgil
Private Secretary to the
Governer, Madhya Pradesh.

From,

MADAN MOHAN, M.L.C.
Vice Chancellor

Govind Vallabh Pant Block,
University of Gorakhpur
Gorakhpur, Sept. 18, 1965

My Dear Pratap.

I am greatful to you for your letter of August 28 and your latest publication. I have gone through it with great interest and congratulate you on your deep study and lucid presentation. I am sure the book will be found very useful for the libraries of Higher Secondary School and Degree Colleges.

With best wishes

Yours sincerely,
Madan Mohan

ईद का चाँद

१ . —श्री प्रताप चन्द्र आज़ाद, प्रकाशक :—स्वराज्य प्रकाशन बरेली, मूल्य :—३ रुपए, पृष्ठ संख्या —२३८ ।

'ईद का चाँद' श्री प्रताप चन्द्र आज़ाद द्वारा सामाजिक पृष्ठ-भूमि पर लिखी गई कहानियों का संग्रह है। प्रस्तुत संग्रह की कहानियों में समाज के विविध अंगों पर प्रकाश डाला गया है ये कहानियां मनुष्य के हृदय और मस्तिष्क दोनों को प्रभावित करती है।

'आज़ाद' हिन्दी साहित्य के लिये कोई नये लेखक नहीं है। उनकी इससे पूर्व ४ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

इन कहानियों में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के जीवन के दर्शन होते हैं। इन कहानियों में वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक बुराइयों को जनता के सामने रखा गया है और एक नई प्रेरणा भी दी गई है।

"फैशन का पुतला" आज के फैशन परस्ती के पुतलों पर करारा व्यंग है।

प्रस्तुत संग्रह की सब कहानियों से हाल के भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय की सामाजिक स्थिति और वातावरण की झलक है।

नवजीवन १२-१२-६६

हिन्दुस्तान २१ अक्तूबर सं० १९६७

उर्मिल के किनारे, लेखक—प्रताप चन्द्र आज़ाद, प्रकाशक—स्वराज्य प्रकाशन बरेली, मुद्रक—हिन्द प्रिन्टर्स बरेली पृष्ठ संख्या - १८२ मूल्य—तीन रुपये।

यह पुस्तक लेखक की पन्द्रह कहानियों का संग्रह है, जिनमें उसने भारत-पाक युद्ध की पृष्ठ भूमि में विभिन्न मानवीय मनोभावों व समस्याओं पर प्रकाश डाला है। लेखक ने अपने राजनीतिक-सामाजिक कार्यों के अनुभव के आधार पर इन कहानियों में भारतीय सैनिकों के शौर्य पर अच्छा खासा प्रकाश डाला है तथा विभिन्न सामाजिक कुरीतियों विशेषकर भ्रष्टाचार और फैशन परस्ती के विरुद्ध भी सशक्त वातावरण निर्माण किया है।

लेखक ने अपनी कहानियों में बोलचाल की भाषा का प्रयोग करके हिन्दी के राष्ट्रीय स्वरूप पर प्रभावकारी ढंग से प्रकाश डाला है। प्रसन्नता इस बात की है कि इनके नायक औसत नर नारी हैं, जो बड़े बड़े आदर्शों नहीं वरन ईमानदारी निष्ठा व मेहनत की मान्यताओं के लिये कष्ट उठाते हैं तथा जन सम्मान आत्म संतोष व सफलता से पुरस्कृत होते हैं। मौत का बदला जिन्दगी का नायक अनीत (जोकि भारतीय सेना का कप्तान है), पाक हमलावरों को खदेड़ता हुआ स्यालकोट पहुँचकर विभाजन के समय अपने ही खून के प्यासे नसीम को प्राण दान देकर भारतीय सेना के गौरव शालीनता पर प्रकाश डालता है। दूसरी ओर टिकट कलेक्टर में खैराती लाल बड़े बाबू अपने ही पुत्र व भ्रष्ट टिकट कलेक्टर को दण्डित कराने में सहायता देकर पाठकों की सहानुभूति अर्जित करते हैं।

नया दौर, लखनऊ।

"पी० सी० आजाद साहब मालिक एम० एल० सी० उत्तर प्रदेश के मशहूर सियासी और समाजी कारकुन होने के अलावा उर्दू के शायर, सहाफी (पत्रकार) और अफसाना निगार (कहानी लेखक) हैं। जमाने तालिब इल्मी ही से वह उरूसे सखुन (कविता) के भी शैदाई हैं, और हुब्बे वतन (देश-भक्ति) के सौदाई। अपनी सियासी सरगर्मियों की बिना पर वह कई मरतबा जेल गये। मगर सख्ती की सऊबत के साथ अदबी दिलचस्पी जारी रही। जेरे नजर किताब उनके अफसानों का मजमुआ है। कुदरतन उनके अफसानों में हुब्बेवतन और समाजी इस्लाह (सुधार) का जज्बा कारफर्मा है, और चूँकि आजाद साहब खुद जंगे-आजादी की सारी तहरीकों (आन्दोलनों) में शरीक रहे हैं इसलिये उनके अफसानों में हकीकत निगारी (सच्चाई की तस्वीर) मिलती है, और उनके किरदार (पात्र) जीते जागते किरदार हैं, जिनसे हमें अपनी जिन्दगी में अक्सर वास्ता मिलता है।"

नया दौर

न ★ कहाँ ?



बाप की बहू

माता पिता के संस्कारों का थोड़ा बहुत प्रभाव उनकी सन्तान पर अवश्य ही पड़ता है, किन्तु प्रदीप के पिता को इस बात की तनिक भी चिन्ता नहीं थी कि उसकी आवारागर्दी की हरकतों का उसके इकलौते पुत्र प्रदीप पर क्या प्रभाव पड़ेगा। प्रदीप की मां तो प्रदीप को १४ वर्ष का छोड़कर ही इस संसार से चलबसी थी। उस समय प्रदीप हाई स्कूल मे पढ़ता था। प्रदीप की मां का सारा जीवन घुटन और परेशानी में गुजरा क्यों कि उसका पति दामोदर एक धनी व्यक्ति होने पर भी दुश्चरित्र आदमी था। दामोदर की स्त्री को दामोदर की सारी करतूतों का पता था किन्तु वह बेचारी दामोदर से कुछ कहने का साहस नहीं रखती थी, और न कभी दामोदर अपनी स्त्री की परवाह ही करता था। वह अकसर नाच तमाशों में रात रात भर गायब रहता। सुबह तो दस से पहले सोकर उठना तो जानता ही नहीं था जब दामोदर की स्त्री का देहान्त हो गया तबसे तो वह और भी अधिक आवारा हो गया। उसे इस बात की तनिक भी चिन्ता नहीं थी कि उसका लड़का प्रदीप जोकि जवान होने जा रहा है उस पर उसकी इन रंगरेलियों का क्या प्रभाव पड़ेगा।

प्रदीप ने हाई स्कूल पास करने के पश्चात अपना दाखला नगर के एक इन्टर कालिज मे ले लिया। प्रदीप पर अपने बाप के कुछ संस्कारों की छाप जवान होते ही लगने लगी। वह एक स्वस्थ और गोरा चिट्ठा नौजवान था। उसे अपनी शिक्षा में भी अधिक ध्यान अपनी फैशन और अपने बनाव शृङ्गार की ओर था। उसके घूंघर वाले काले बाल, उसकी बड़ी बड़ी आंखे, उसका सुडौल शरीर और उसका चांद जैसा चेहरा,

उसकी फैशन का और भी अधिक चार चाद लगाये हुये थे। वह अपने कालिज के सुन्दर और फैशनेबुल लडको मे शुमार किया जाता था। किन्तु उसमे एक यह गुण अवश्य था कि बनाव शृङ्गार के साथ वह अपनी कक्षा मे इतना पढ लिख लेता था कि प्रत्येक वर्ष पास होता रहता था।

प्रदीप की मा के देहान्त को लगभग दस वर्ष हो गये थे। प्रदीप के पिता दामोदर की आयु भी अब लगभग ५५ वर्ष के हो चुकी थी। प्रदीप की आयु भी २४ वर्ष के आस पास थी। प्रदीप अब कालिज मे बी०ए० कक्षा मे पहुँच चुका था। इसलिये दामोदर के जो रिश्तेदार या मित्र उससे पास आते, वह दामोदर से प्रदीप के विवाह करने का सुझाव देते थे ताकि दामोदर के घर को सभालने के लिये एक स्त्री आजाय। किन्तु दामोदर सदैव यह कह कर टाल देता था कि प्रदीप अभी बच्चा है। वह जब पढ लिखकर निवृत्त हो जायगा तभी उसका विवाह रचाना ठीक रहेगा। उधर दामोदर की जो आदत जवानी मे पड़ गई थी उसमे कोई कमी नही पाई जाती थी। वह नाच रग, थ्येटर और सिनेमा का अब भी उतना ही शौकीन था जितना जवानी मे। वह अब भी अक्सर रगरेलियो मे रात रात भर घर मे गायब रहता, प्रदीप और नौकर चाकर ही महल जैसे आलीशान मकान को आबाद किये रहते थे। अब तो कभी कभी प्रदीप भी अपनी मित्र मडली के साथ सिनेमा जाने लगा था। इसलिये जिस दिन वह भी रात्री को सिनेमा चला जाता तो घर मे नौकर चाकर ही चैन की बसी बजाते थे, अक्सर ऐसा भी होने लगा कि दामोदर जब रात्री को देर से घर आता तो वह प्रदीप को घर मे नही पाता। नौकर चाकरो से पूछने पर उसे ज्ञात होता कि वह सिनेमा गया हुआ है। तब दामोदर को कुछ ऐसा आभास हुआ कि कही प्रदीप आवारा न हो जाय इसलिये उसने सोचा कि प्रदीप का विवाह किसी पढी लिखी सुन्दर युवती मे कर दिया जाय। दामोदर ने अपने इष्ट मित्रो से भी प्रदीप के विवाह की चर्चा की। दामोदर शहर के धनी आदमियो मे से था। फिर प्रदीप भी पढा

निवा [illegible] [illegible] राजस्थान [illegible] प्रांत प्रान्त मे अपनी लड़की का विवाह करने को न जाने कितने धनी और प्रतिष्ठित व्यक्ति मुँह फैलाये बैठे थे। कुछ ही दिनों में दामोदर के पास सुन्दर युवतियों के फोटो और उनके माँ बाप के पत्रों का ताँता लग गया।

एक दिन दामोदर अपने ड्राइंग रूम में बैठा हुआ अपने कुछ मित्रों से बात कर रहा था कि इतने में पोस्टमैन ने आवाज दी और एक रजिस्टर्ड लिफाफा जिसमें एक पत्र और एक फोटो था, दामोदर के हाथ में दिया। दामोदर ने लिफाफा खोला तो एक युवती का फोटो और उसकी माँ का एक पत्र दामोदर के नाम इन शब्दों में था।

'आदरणीय दामोदर दास जी!

'मुझे यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि आप अपने सुपुत्र चिरंजीव प्रदीप के विवाह का संकल्प कर रहे हैं। मैं भी अपनी लड़की निर्मला का फोटो आपकी सेवा में भेज रही हूं। मुझे आशा है कि चिरंजीव प्रदीप को यदि मेरी पुत्री का फोटो पसन्द आ जाय तो दोनों की युगल जोड़ी एक आदर्श जोड़ी होगी।

मैं इतना और स्पष्ट कर दूँ कि मैं एक विधवा स्त्री हूँ। मेरे पति अपने पीछे केवल निर्मला को ही सन्तान के रूप में छोड़ गये हैं। वैसे भगवान की कृपा से मेरे पास एक बंगला और कई दुकानें शहर के बीच बाजार में हैं जो सब मेरे बाद निर्मला की ही सम्पत्ति होगी। निर्मला की आयु बीस वर्ष की है।

उत्तर की प्रतीक्षा में"

दामोदर ने निर्मला का फोटो देखा तो उसे ऐसा लगा जैसे कि साक्षात कोई सौन्दर्य की मूर्ति विराजमान हो, उसका रोमांस जाग उठा। उसके हृदय में एक अजीब गुदगुदी पैदा होने लगी। उसने अपने पास बैठे हुये अपने एक मित्र से निर्मला का फोटो दिखाते हुये कहा।

"देखिये, यह लड़की क्या साक्षात सुन्दरता की प्रतिमा है?"

"मम आइ गक न । गमाटग दास जी अगर यह लग्की आपने घर म बन बनकर आगई ता आपके घर का जगमगा देगा

"लेकिन । यह खत तो पढो, इस लडकी की केवल विधवा मा है और कोई नही । फिर उम्र २० वर्ष की है जबकि प्रदीप अभी २४ वर्ष का भी पूरा नही हुआ है ।'

"हा, तब तो ठीक नही ; प्रदीप का विवाह तो भरे पूरे घर मे होना चाहिये जहा प्रदीप की सास, ससुर, साले और सालिया सभी हो ।'

"बिल्कुल यही मेरा विचार है, किन्तु यह लडकी इतनी सुन्दर है कि मेरा दिल कह रहा है कि इसे भी किसी न किसी प्रकार हमारे घर की शोभा बनना चाहिये ।"

"तो फिर दामोदर दास जी । प्रदीप से न सही आप ही अपना विवाह इससे कर लीजिये । अभी तो आप पचास साल के ही है । आजकल तो लोग साठ साठ वर्ष मे शादी कर रहे है ।'

"तुमने मेरे मु ह की बात छीन ली । लेकिन यह बताओ जो प्रदीप की शादी के लिये फोटो भेज रही है वह मुझसे विवाह करने को कब तैयार हो जायगी ।"

'दामोदर दास जी ' यह काम आप मुझपर छोडे । मै उस बुढिया का ऐसे हरे बाग दिखाऊंगा कि आपसे विवाह करने पर अवश्य राजी हो जायगी ।"

"किन्तु प्रदीप इस उम्र मे मेरी शादी को पसन्द करेगा ?"

"क्यो नही । उसे भी समझाना मेरे बाये हाथ का खेल है ।"

"उसको आप कैसे समझायेगे ?"

"दामोदर दास जी । उससे तो मै यह कहूगा कि बेटा तेरे विवाह से पहिले तेरी बहू का लाड प्यार करने के लिये इस घर मे तेरी मा की जरूरत है, सगी मा न सही तो सोती ही सही ।

"तो फिर इस शुभ कार्य मे देर क्या ।"

"लो अभी जाता हूं और भगवान ने चाहा तो शाम तक बाजी जीत कर आऊँगा।"

यह कहकर दामोदर का मित्र दामोदर से एक हजार रुपये के नोट लेकर चला गया। वह सीधा निर्मला की मा के पास पहुंचा। निर्मला की मा अपने कमरे मे बैठी किसी नौकर से बात कर रही थी। बाहर से किसी की आवाज सुनते ही उसने नौकर को भेजा कि वह देखकर आये कि कौन है। नौकर ने वापस आकर बताया कि कोई सज्जन उससे निर्मला के विवाह के सम्बन्ध मे कुछ पूछने आये है। निर्मला की मा ने नौकर से कहकर उन्हे घर के भीतर ही ड्राइंग रूम मे बुला लिया। दामोदर दास के मित्र ने आते ही निर्मला की मा से कहना आरम्भ किया।

"शायद आप ही निर्मला की मा है।"

"जी हां"

"आपने कोई पत्र और निर्मला का फोटो दामोदर दास जी के पास भेजा था।"

"जी हा। तो क्या आप दामोदर दास के यहा से आये है।"

"जी हा मैं दामोदर दास का एक घनिष्ठ मित्र हूं। आपको कुछ गलत फहमी हो गई इसलिये मैं स्वय आपकी सेवा मे उपस्थित हुआ हूं।"

"वह क्या ?"

"वह यह कि दामोदर दास का लड़का तो अभी बच्चा है। दामोदर दास उसके पालन पोषण और लाड प्यार के कारण स्वय अपनी शादी करना चाहते है।"

"अच्छा यह बात है, दामोदर दास की उम्र कितनी होगी ?" निर्मला की मा ने बडी उत्सुकता से पूछा।

"यही ३५ और ४० के बीच मे। फिर आप जानती हैं धनी मानी व्यक्ति है और तन्दुरुस्ती भी भगवान ने ऐसी कमाल की दी है कि लाल सुर्ख पड रहे है।"

"लेकिन भी निर्मला की उम्र तो बीस ल की ही है

"तो फिर बिल्कुल ठीक जोडा बनेगा ३५ के दामोदर दास और २० साल की निर्मला। घर क्या स्वर्ग बन जायगा।"

"लेकिन मैंने तो प्रदीप के विवाह के लिये निर्मला का फोटो भेजा था न कि दामोदर दास के लिये।"

"ओह हो! आप मेरी बात समझ नही रही हैं। प्रदीप तो अभी बच्चा है। १५ या १६ वर्ष का उसके तो विवाह का तो प्रश्न ही नही उठता। निर्मला की जोड़ी तो दामोदर दास से ही ठीक रहेगी।"

"इसके लिये मुझे समय की आवश्यकता है।"

"यह आपकी बात ठीक है। शादी विवाह कोई गुडिया गुड्डो का खेल तो नही है। आप दामोदर दास के सम्बन्ध मे पूरी जानकारी करले तब विवाह की बात करे। किन्तु इसके लिये मुझे समय निर्धारित करदे। क्योकि जब से शहर में यह शोहरत हुई है कि दामोदर जी विवाह करेगे रोज दसो फोटो और पत्र एव सन्देशो का ताता लगा रहता है।"

"क्यो नही लगेगा। आखिर दामोदर दास अपने शहर के धनी और पढे लिखे व्यक्ति है।"

"इसीलिये तो मै समय निर्धारित करा रहा हूँ।"

"मैं एक सप्ताह मे आपको फाइनल उत्तर दे दूंगी।"

"बहुत अच्छा।"

यह कहकर दामोदर दास का दलाल मित्र वहा से चला आया और दूसरे ही दिन रेल मे बैठकर दामोदर दास के पास पहुँच गया। उसने अपने और निर्मला की मा के बीच हुई सारी बातों को दामोदर दास को विवरण सहित सुना दिया। उसने यह भी बता दिया कि बुढिया ने सात दिन का समय अन्तिम निर्णय हेतु दिया है। दामोदर दास को अपने मित्र की बातें सुनकर ऐसा लगा जैसे कि जवानी उसके शरीर मे पुन. प्रवेश कर रही है। उसके हृदय

में एक अजीब प्रकार की गुदगुदी उठने लगी। सात दिन किस बेचैनी और विवशता में व्यतीत होंगे। उसे बार बार यही विचार परेशान कर रहा था। उसने अपने मित्र से परामर्श किया कि बुढ़िया का निर्णय किस प्रकार उसके पक्ष में हो इसकी भी योजना बनानी चाहिये। आखिर उसका मित्र तो हरफनमौला था ही, कुछ देर सोचकर उसने चुटकी बजाकर दामोदर दास का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुये कहा।

"सुनिये दामोदर दास जी! मेरी समझ में एक तिकड़म आ गई।"

"अरे भाई तुम तो तिकड़मों के ही बादशाह हो फिर क्यों न तुमने कोई तिकड़म की अच्छी योजना बनाई होगी।'

"बहुत अच्छी योजना है।"

"क्या है बताइये भी तो।"

"सुनो भाई दामोदर दास जी। इस नगर में कुण्टो नाम की एक कुटनी रहती है। वह बड़े बड़े लोगों को अपने जाल में फास चुकी है।"

"लेकिन वह तो अपने लिये लोगों को फासती होगी न कि दूसरों के लिये।"

"नही लाला दामोदर दास! कुण्टो का यही तो कमाल है कि उसको मुँह मागा पैसा दीजिये और बड़े से बड़ा काम अपने लिये करा लीजिये।"

"मैं तुम्हारा मतलब नही समझा। वह कुटनी हमारी क्या सहायता कर सकती है।"

'दामोदर दास जी! यही तो समझने की बात है।"

"समझाइये।"

"वह यह, कि मैं उस कुटनी को कहूँगा कि वह सजधज कर बुढ़िया के पास जाय, और अपने आपको बड़े साहूकार की स्त्री जाहिर करे, और बुढिया से यह कहे कि वह अपनी लड़की का विवाह दामोदर दास से करना चाहती है क्योंकि दामोदर दास एक बहुत बड़ा आदमी है। साथ ही वह यह भी कहे कि उसने सुना है कि निर्मला के विवाह की बात भी दामोदर दास से चल रही है,

इसलिये वह बुढ़िया पर यह जोर दे कि वह निर्मला के विवाह की बात दामोदर दास से समाप्त करदे और उसके लिये वह जितना पैसा घूस में चाह उससे ले ले।"

"लेकिन, इससे कैसे काम बनेगा।"

"लाला दामोदर दास आप देखें ऐसा बढ़िया काम बनेगा कि आप भी अचम्भे में पड़ जायेंगे

"वह क्या ?"

"वह यह कि निर्मला की मा कुण्टो की बातें सुनते ही यह समझ जायगी कि वास्तव में दामोदर दास बहुत बड़ा आदमी है और शादी करने वाले उसके आगे पीछे मारे मारे फिरते हैं। वह तुरन्त निर्मला का विवाह आपसे करने को तैयार हो जायगी।"

"बात खूब सोची, अगर कामयाबी हो जाय तो मैं तुम्हें नोटों के हार पहिनाऊंगा।"

"दामोदर दास जी ! आप देखें सौ फीसदी कामयाबी होगी।"

"अच्छा तो शुभ काम में देर क्या।"

"कुछ नहीं, मैं अभी कुण्टो के पास जाकर उसे निर्मला की मा के पास भेजता हूँ।"

यह कहकर दामोदर दास का मित्र वहां से उठकर सीधा कुण्टो के घर आया। उसने कुण्टो को सब कुछ बताकर निर्मला की मा के पास जाने को कहा। कुण्टो तो रुपये की भूखी थी। उसने इस काम के लिये पांच सौ रुपये की फरमाइश की। दामोदर दास का मित्र पांच सौ रुपये कुण्टो को देने को तुरन्त तैयार हो गया। उसने दूसरे ही दिन दामोदर दास से पांच सौ रुपये लाकर कुण्टो को दे दिये। कुण्टो एक बड़ी सुन्दर साड़ी पहिनकर और सजधज कर उस नगर में पहुँची जहां निर्मला की मा रहती थी। वह सीधी निर्मला की मा के कमरे में घुसती चली गई। निर्मला की मा को आश्चर्य भी हुआ कि यह कौन सी स्त्री है जो बिना पूछे हुये सीधे उसके पास आकर बैठ गई।

कुन्टो ने दोनों हाथ जोडकर निर्मला की माँ को नमस्कार किया। इतने में सामने से निर्मला भी आगई। अभी निर्मला की माँ कुछ पूछने ही वाली थी कि कुन्टो ने उसे कुछ कहने का अवसर न देकर स्वय ही कहना आरम्भ कर दिया।"

"निर्मला की माँ ! आपको पहिली बार मुझे अपने कमरे मे देखकर अचम्भा हुआ होगा"

"हाँ, माफ कीजिए, मै आपको पहिचान नही सकी"

"आप ठीक ही नही पहिचान सकी क्योंकि इसमे पहिले कभी मेरी और आपकी कही भेट नही हुई"

"अच्छा तो आज आपने कैसे कष्ट किया"

"निर्मला की माँ ! मैंने कष्ठ किया नही बल्कि आपको कष्ट दिया।"

"कहिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ"

" निर्मला की माँ ! मैं भी तुम्हारी ही तरह एक विधवा स्त्री हूँ। और मेरे भी केवल एक ही लडकी है। धन दौलत की मेरे पास भी कोई कमी नही, बगला और मोटर के अलावा मेरे पति कई लाख रुपये की सम्पत्ति छोडकर गये हैं।"

"तो फिर आपको क्या चिन्ता है"

"निर्मला की माँ सबसे बडी चिन्ता मुझे यह है कि मैं अपनी लडकी के हाथ पीले करके किसी अच्छे और योग्य व्यक्ति के साथ शादी करदूँ।"

"इस शुभ कार्य में आप मुझसे क्या सहायता चाहती हैं"

"निर्मला की माँ ! मैंने अपनी लड़की के विवाह के लिये एक नौजवान दामोदर दास को ढूंढा था हालांकि उसकी पहिली स्त्री का देहान्त हो चुका है किन्तु फिर भी वह स्वस्थ, योग्य और एक धनी

परिवार में से है। अब मालूम है [illegible] आप [illegible] उसमें करना चाहता है।

"हाँ, इस सम्बन्ध में कुछ बात चल तो अवश्य रही है किन्तु अभी मैंने कोई आखिरी फैसला नहीं किया है।"

"निर्मला की माँ! मैं आपसे यही तो निवेदन करने आई हूँ कि यदि आप दामोदर से निर्मला का विवाह करना चाहती हैं तो मैं आप दोनों के बीच में नहीं आना चाहती, किन्तु अगर आपने कोई और लड़का ढूंढ लिया हो तो मुझे बता दीजिये ताकि मैं तुरन्त दामोदर से अपनी लड़की का विवाह कर दूँ। क्या फिर मुझे दामोदर जैसा लड़का जमाने में ढूंढ़े से मिलेगा?"

निर्मला की माँ थोड़ी देर तक कुछ सोचती रही। उसने निर्मला की ओर देखा और कुछ का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करके मुस्कराते हुये कहा।

"बहिन जी, जब दामोदर हजारों में एक है तो मैं कैसे उसे छोड़ सकती हूँ। मैंने दामोदर के मित्र को एक सप्ताह के भीतर उत्तर देने को कहा था। मैं कल ही उसे संदेशा भेज देती हूँ कि मैं निर्मला की शादी दामोदर से करने को तैयार हूँ।"

"अच्छा निर्मला की माँ! तो मेरी तरफ से भी आप बधाई स्वीकार कीजिये कि आपको ऐसा लड़का मिल गया कि निर्मला जीवन भर रानी बनकर रहेगी।"

"आपका धन्यवाद"

"अच्छा तो अब मुझे आज्ञा दीजिये"

"यह कैसे हो सकता है. आप इतनी दूर से आरही हैं न आपने चाय पी न खाना खाया। मैं आपको बिना खाना खिलाये नहीं जाने दूँगी।"

[illegible] मे मुझ घर पर [illegible] है। वहा लड़का को बेचा [illegible] के पास [illegible] आई हूं। इसलिये इस समय मुझे आज्ञा दे दीजिये।"

यह कहकर कुन्टो वहा से चली आई और वह अपने नगर में पहुँच कर सीधी दामोदर दास के उसी मित्र के मकान पर पहुँची जिसने यह काम उसके सुपुर्द किया था। उसने जाते ही यह शुभ समाचार दामोदर के मित्र को सुना दिया। दामोदर का मित्र कुन्टो को लेकर खुशी खुशी सीधा दामोदर के मकान पर पहुँचा और उसने दामोदर को कुन्टो द्वारा उसकी योजना की सफलता का शुभ सन्देश दिया। दामोदर खुशी से उछल पड़ा। उसने तुरन्त सन्दूक खोलकर नकद पाँच सौ रुपये निकाल कर इनाम के रूप में और कुन्टो को दिये। कुन्टो यह रुपये लेकर खुशी से उछलती कूदती अपने घर चली गई। दूसरे ही दिन निर्मला की माँ ने अपने किसी रिश्तेदार को भेजकर निर्मला की शादी दामोदर से करने का स्वीकृति पत्र दिया।

दामोदर और निर्मला की शादी निश्चित हो गई। शादी वाले दिन दामोदर ने बढ़िया से बढ़िया खिजाब मलकर अपने सफेद बालों को काला किया। उसके दांत भी पत्थर के बने हुये लगे थे। उसने डेन्टल सर्जन की दुकान पर जाकर एक बहुत सुन्दर और सफेद दाँतों की बत्तीसी कई सौ रुपये में खरीदकर अपने पुराने दाँतों को बदलवा कर लगवाई। उसने अपने चेहरे को पाउडर से ऐसा बना लिया जैसे कि वह २५ वर्ष का जवान हो। उसने अपने मित्र को यह भी कह दिया कि वह प्रदीप को यह समझादे कि विवाह के समय उसका घर पर रहना ठीक नहीं। वह कुछ दिनों को अपने किसी मित्र के यहा चला जाय। प्रदीप स्वयं भी समझ गया कि दामोदर का ऐसा कहलाने का क्या तात्पर्य है; अतः वह दामोदर के विवाह के समय अपने किसी मित्र के घर चला गया।

दामोदर और निर्मला का विवाह हो गया। निर्मला दामोदर के घर दुल्हन बनकर आगई। कुछ दिनों तक तो वह भी दामोदर की उम्र का अन्दाजा नहीं लगा सकी किन्तु आखिर यह सब कैसे छुप सकता था। शादी के पश्चात निर्मला जब पुन दामोदर के घर आई तो उसे पता लग गया कि दामोदर के एक जवान लडका भी है। वह यह भी समझ गई कि दामोदर ने विवाह के समय खिजाब लगाकर अपने बालो को काला कर रक्खा था। शनै शनै उसे यह भी पता चल गया कि दामोदर के दात पत्थर के मसनुई बने हुये हैं। किन्तु वह कर ही क्या सकती थी, इसलिये कि उसका विवाह तो सदैव के लिये दामोदर के साथ हो चुका था। उधर कुछ ही दिनों बाद प्रदीप भी घर पर आगया। प्रदीप का स्वस्थ और सुडौल शरीर, बड़ी बडी आंखे, काले घू घर वाले बाल और गोरा चिट्टा रग देखकर निर्मला को ऐसा लगा कि यदि उसका विवाह दामोदर के बजाय उसके बेटे प्रदीप से हुआ होता तो दोनो का जीवन कितना सुखी और आनन्दमय होता। उधर प्रदीप ने भी पहिली बार जब निर्मला को देखा तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। प्रदीप तो यह समझता था कि उसके पिता ने किसी अधेड स्त्री से शादी की होगी। किन्तु निर्मला तो बीस वर्ष की एक सुन्दर लडकी थी, जिसे देखकर ऐसा लगता था जैसे कि सौन्दर्य की साक्षात मूर्ति उसके घर में आ गई हो। प्रदीप को यह शादी पसन्द नहीं थी। वह दिल ही दिल मे कुढता था और अपने बाप को एक नौजवान और सुन्दर युवती के अर्मानो की हत्या का अभियोगी ठहराता था, किन्तु विवश था। वह कर ही क्या सकता था। इस प्रकार निर्मला और दामोदर के विवाह को लगभग चार वर्ष व्यतीत हो गये। इस बीच मे दामोदर निर्मला को पाकर इतना मस्त हो गया कि वह यह भूल गया कि उसे अपने जवान लडके प्रदीप का विवाह भी करना है। अक्सर उसके नाते रिश्तेदार उसका ध्यान प्रदीप की शादी की ओर दिलाते तो दामोदर यह कहकर टाल देता था।

"प्रदीप अब स्वयं जवान है, वह अपनी मर्जी से अपने लिये कोई लड़की ढूंढ ले। मुझे उसमें कोई आपत्ति नहीं होगी।"

प्रदीप भी समझ गया कि उसका बाप निर्मला के साथ रंगरेलियों में इतना मस्त है कि उसे उसके विवाह की कोई चिन्ता नहीं। प्रदीप भी नहीं चाहता था कि उसका विवाह जल्द हो जाय। उसका कारण यह था कि वह अपने नगर में कई सुन्दर युवतियों को अपने जाल में फांस चुका था। हर एक से वह शादी करने का वचन देता किन्तु शादी के बाद उसकी आजादी समाप्त हो जायगी और वह एक ही स्त्री से बंधकर रह जायगा, इस बात को सोचकर वह सदैव टाल मटोल करता रहता था।

प्रदीप रात्रि को सदैव देर से लौटता था। कभी कभी तो रात्रि के बारह बज जाते थे। इसलिये सुबह को अक्सर वह देर तक सोता रहता था। एक दिन सुबह आठ बज गये और प्रदीप सोता ही रहा। अकस्मात बाहर से उसके किसी मित्र ने आवाज दी। घर में उस समय न तो कोई नौकर ही था, और दामोदर भी किसी काम से बाहर चला गया था। निर्मला कुर्सी पर बैठी बरामदे में चाय पी रही थी। उसने देखा घर में कोई नौकर नहीं है, तो वह स्वयं ही प्रदीप के कमरे में उसे जगाने के लिये चली गई। प्रदीप गहरी नींद में सो रहा था। निर्मला ने प्रदीप को घूर घूर कर देखा। उसको फिर इसी विचार ने बेचैन कर दिया कि उसका जीवन कितना आनन्ददायक होता यदि उसकी शादी प्रदीप से होती। वह इसी विचार में अपने को खोया हुआ सा पाने लगी। उसे यह भी खबर नहीं रही कि बाहर प्रदीप को कोई आवाज दे रहा है। उसका दिल बेकाबू हो उठा। वह इसी दशा में प्रदीप की चारपाई पर प्रदीप के गले में अपनी बाहें डालकर बैठ गई। प्रदीप निर्मला के चारपाई पर बैठते ही जाग पड़ा उसने देखा कि निर्मला उसके गले में बाहें डाले बैठी है। उसका सुन्दर चेहरा और कोमल हाथों को देखकर उसे ऐसा लगा जैसे उसके समस्त शरीर में कोई बिजली की करेण्ट दौड़ रही हो। पहिले तो वह कुछ समझ

नहीं। फिर उसने यह सोचा शायद निर्मला तुमे मा का प्यार देने आई हो। इसलिये उसने निर्मला की ओर देखकर कहा।

"माँ क्या बात है"

'तुम मुझे माँ मत कहो"

'क्यो"

"इसलिये कि तुम्हारे बाप ने अपनी काम वासनाओं को पूरा करने के लिये बुढ़ापे में मुझसे विवाह रचाया है विवाह तो मेरा तुम्हारे साथ होना चाहिये था।'

"किन्तु अब ऐसा सोचना भी आपके लिये पाप है'

"प्रदीप ! तुम एक अपटूडेट नौजवान होकर ऐसी बात कर रहे हो। एक बूढ़ा जवान लड़की से शादी करे यह पाप है या एक जवान लड़की जवान लड़के से प्यार करे यह पाप है।"

"आपका मतलब"

"प्रदीप ! मेरा मतलब यह है कि मै तुमसे प्यार करती हूँ"

"लेकिन, पिता जी से आपकी शादी हो चुकी है। यह कैसे सम्भव होसकता है कि आप मुझसे प्यार करें, समाज हम दोनो को क्या कहेगा"

"प्रदीप ! समाज ने जब हमारे साथ न्याय नही किया तो फिर समाज की हमें क्या चिन्ता है।"

"नहीं ऐसा मत कहिये"

"प्रदीप ! मैं नहीं समझती थी कि तुम इतने बुजदिल निकलोगे। जब मुझे तुम्हारे बाप और समाज का डर नही है तो तुम क्यो घबरा रहे हो। क्या तुम्हे मैं पसन्द नहीं हूँ।"

"आप तो साक्षात सौन्दर्य की मूर्ति है। आपको देखकर किसका दिल नहीं हिल जायगा। लेकिन आप परिस्थितियो को जानती हैं।"

"उन परिस्थितियों का हम तुम दोनों मुकाबला करेंगे"

"कैसे"

"ऐसे, कि हम दोनों इस घर से निकल चलें और फिर कहीं दूसरी जगह चलकर अपना घर बसायें।"

प्रदीप ने निर्मला के इन शब्दों को सुनकर, अकस्मात उसके चेहरे पर दृष्टि डाली, तो उसे लगा, जैसे कि निर्मला का सौन्दर्य उसके हृदय मे समा गया हो। उसे कुछ गुदगुदी सी महसूस होने लगी। वह आगा पीछा सब भूल गया। वह अपने हृदय पर नियन्त्रण न रख सका और निर्मला की बाह जो उसके गले म पड़ी हुई थी उसने उन्हें अपने ओठों से चूम लिया निर्मला और प्रदीप एक दूसरे के प्रेम मे इतने पागल हो उठे कि वह अपने होश और हवास भी खो बैठे। और फिर उसी दिन दोनों न जाने कहां चले गये ?

दोपहर के पश्चात लगभग एक बजे दामोदर बाहर से घर वापस आया तो घर मे निर्मला और प्रदीप दोनों मे से किसी को न पाकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। दरवाजे के पास बैठे हुये नौकर से दामोदर ने पूछा तो नौकर ने उसे बताया कि वह सुबह बाजार सब्जी लेने गया था किन्तु जब वापस आया तो निर्मला और प्रदीप दोनों मे से किसी को नहीं पाया। दामोदर नौकर की बात सुनकर पहिले तो यह समझा कि शायद निर्मला पड़ोस मे किसी के घर चली गई हो किन्तु जब उसने निर्मला के कमरे मे जाकर देखा तो सेफ खुला पड़ा था। उसमे एक पैसा भी नहीं था। निर्मला की अटेची जिसमे निर्मला के हजारों रुपये के आभूषण थे वह भी कमरे मे नहीं थी। दामोदर को यह देखकर पसीना आ गया और वह सर पकड़ कर बैठ गया। उसने निर्मला की मा के पास तुरन्त आदमी भेजा किन्तु वहां भी कोई पता न चला।

नहा फिर उस [illegible] निमन्त्रा उस [illegible] था [illegible] थोड़ [illegible]
इसलिये उसने निमन्त्रा की ओर देखकर कहा ।

"माँ क्या बात है"

"तुम मुझे माँ मत कहो"

"क्यों"

"इसलिये कि तुम्हारे बाप ने अपनी काम वासनाओं की तृप्ति के लिये बुढ़ापे में मुझसे विवाह रचाया है । विवाह तो मेरा तुम्हारे साथ होना चाहिये था ।"

"किन्तु अब ऐसा सोचना भी आपके लिये पाप है"

"प्रदीप ! तुम एक ग्रेजुएट नौजवान होकर ऐसी बात कर रहे हो । एक बूढ़ा जवान लड़की से शादी करे यह पाप है या एक जवान लड़की जवान लड़के से प्यार करे यह पाप है ।"

"आपका मतलब"

"प्रदीप ! मेरा मतलब यह है कि मैं तुमसे प्यार करती हूँ"

"लेकिन, पिता जी से आपकी शादी हो चुकी है । यह कैसे सम्भव होसकता है कि आप मुझसे प्यार करें, समाज हम दोनों को क्या कहेगा"

"प्रदीप ! समाज ने जब हमारे साथ न्याय नहीं किया तो फिर समाज की हमें क्या चिन्ता है ।"

"नहीं ऐसा मत कहिये"

"प्रदीप ! मैं नहीं समझती थी कि तुम इतने बुजदिल निकलोगे । जब मुझे तुम्हारे बाप और समाज का डर नहीं है तो तुम क्यों घबरा रहे हो । क्या तुम्हें मैं पसन्द नहीं हूँ ।"

"आप तो साक्षात सौन्दर्य की मूर्ति है । आपको देखकर किसका दिल नहीं हिल जायगा । लेकिन आप परिस्थितियों को जानती हैं ।"

"उन परिस्थितियों का हम तुम दोनों मुकाबला करेंगे"

"कैसे"

"ऐसे, कि हम दोनों इस घर से निकल चलें और फिर कहीं दूसरी जगह चलकर अपना घर बसायें।"

प्रदीप ने निर्मला के इन शब्दों को सुनकर अकस्मात उसके चेहरे पर दृष्टि डाली तो उसे लगा, जैसे कि निर्मला का सौन्दर्य उसके हृदय में समा गया है। उसे कुछ गुदगुदी सी महसूस होने लगी। वह आगा पीछा सब भूल गया। वह अपने हृदय पर नियन्त्रण न रख सका और निर्मला की बाहें जो उसके गले में पड़ी हुई थीं उसने उन्हें अपने ओठों से चूम लिया निर्मला और प्रदीप एक दूसरे के प्रेम में इतने पागल हो उठे कि वह अपने होश और हवास भी खो बैठे। और फिर उसी दिन दोनों न जाने कहाँ चले गये?

दोपहर के पश्चात लगभग एक बजे दामोदर बाहर से घर वापस आया तो घर में निर्मला और प्रदीप दोनों में से किसी को न पाकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। दरवाजे के पास बैठे हुये नौकर से दामोदर ने पूछा तो नौकर ने उसे बताया कि वह सुबह बाजार सब्जी लेने गया था किन्तु जब वापस आया तो निर्मला और प्रदीप दोनों में से किसी को नहीं पाया। दामोदर नौकर की बात सुनकर पहिले तो वह समझा कि शायद निर्मला पड़ोस में किसी के घर चली गई हो किन्तु जब उसने निर्मला के कमरे में जाकर देखा तो सेफ खुला पड़ा था। उसमें एक पैसा भी नहीं था। निर्मला की अटेची जिसमें निर्मला के हजारों रुपये के आभूषण थे वह भी कमरे में नहीं थी। दामोदर को यह देखकर पसीना आ गया और वह सर पकड़ कर बैठ गया। उसने निर्मला की मां के पास तुरन्त आदमी भेजा किन्तु वहां भी कोई पता न चला।

तब से अब तक प्रदीप और निर्मला का कोई पता नहीं लगा कि वह कहां चले गये। लाला दामोदर दास के पास जो भी रुपया, आभूषण आदि सेफ में रक्खे हुये थे वह सब भी निर्मला ही लेकर चली गई। अब बेचारे दामोदर दास गरीबी की हालत में दिन गत अपने जीवन के अन्तिम दिनों को निराशा और दुःख के वातावरण में व्यतीत कर रहे हैं। जो घर निर्मला और प्रदीप के चांद और सूर्य जैसे सुन्दर मुखड़ों से जगमगाता रहता था, आज वहां नहूसत बरस रही है। नगर में निर्मला और प्रदीप के भाग जाने पर नाना प्रकार की चर्चायें होती रहती हैं, और सभी लोग दामोदर को दोषी ठहराते हैं कि उसने बुढ़ापे में निर्मला जैसी सुन्दर लड़की से प्रदीप का विवाह न करके अपना विवाह रचाया और उसी का यह दुष्परिणाम भुगतना पड़ रहा है।



पागल कुत्ता

जब कुत्ता पागल हो जाता है तो फिर वह हर किसी पर काटखाने को दौडने लगता है। यहाँ तक वह अपने मालिक को भी भूल जाता है और अकसर उसे भी काटखाने को झपटता है। यही दशा बिलकुल सोमसिंह की थी। वह जरा सी पदवी पर पहुँचता अपने पराये सबको भूलकर, अपनी शक्ति के घमन्ड मे लोगो को ऐसे ही परेशान करने पर तुला रहता था, जैसे की पागल कुत्ता। माँ बाप के बहुत कुछ सस्कार भी संतान पर पडते है। सोम का बाप भी इसी गाँव के, समाज मे यहाँ तक कि अपने परिवार मे उलझाता रहता और दूसरो की बुराई करने, दूसरो से ईर्ष्या रखने मे, अपना बडा गौरव समझता था। यह सब अवगुण सोम को अपने बाप से विरासत मे मिले थे।

सोम जब स्कूल मे पढता था तभी से वह सारे अवगुणो से भरपूर था। वह सदैव अपने साथियो और सहपाठियों में दुर्व्यवहार करता। उन से ईर्ष्या द्वेष रखता और हर समय दूसरो की बुराई करने और दूसरों का बुरा चाहने मे ही अपने उद्देश्यो की पूर्ति समझता था। वह बड़ा लोभी भी था। अपने छोटे से लाभ के लिये दूसरो को बडी से बडी क्षति पहुँचाने मे जरा भी सकोच नही करता था। यदि उसकी कक्षा मे किसी को पुरस्कार मिलता या कोई छात्र अच्छे नम्बरो से पास हो जाता तो उसके हृदय मे उस छात्र के विरुद्ध ईर्ष्या की आग भड़क उठती थी। यदि कक्षा मे कोई अध्यापक किसी छात्र के अच्छे गुणो या उसके पठन-पाठन की तारीफ करता तो सोम का दिल क्रोध से काप उठता था। इस पर भी सोम सदैव यह चाहता था कि लोग उसकी प्रशसा करें, लोग उसकी प्रतिष्ठा करें और उसको अपना नेता मानें। नेता बनने की तो उसकी इच्छा इतनी तीव्र थी कि जब वह कालिज में पहुँचा, तो न जाने कालिज की

कितनी सांस्कृतिक और साहित्यिक संस्थाओं की सदस्यता के लिए उम्मीदवार बनता रहा किन्तु अपने दुर्व्यवहार से इसे हर बार असफलता का ही मुँह देखना पड़ा। जब वह अपने गाँव में आता तो गाँव वालों पर अपने मुँह मियां मिट्ठू बनकर अपनी प्रशंसा के पुल बांधता, किन्तु गाँव के लोग तो उसके सभी अवगुणों से भली भांति परिचित थे, इसलिए वहां उसकी तनिक भी दाल नहीं गलती थी। पढ़ने लिखने में तो वह इतना कुढमगज था कि एक एक कक्षा में कई कई बार फेल होता, किन्तु फिर भी उसका बाप अपने लड़के की तारीफ के सदैव पुल बांधता रहता था और सोम अपने बाप के मुंह से अपनी तारीफ सुनकर खुशी से फूला नहीं समाता था।

सोम कालिज में कब तक अपने भाग्य को कोसता। आखिर बी०ए० में कई वर्ष फेल होने के बाद उसने कालिज से नाम कटाकर नेतागीरी की खाक छानना आरम्भ करदी। प्रातःकाल से सायंकाल तक गांधी टोपी, बन्द कालर का कोट और सफेद खद्दर की धोती पहिने हुये कारटून का रूप बनाये वह छोटे से लेकर बड़े नेताओं तक की चौखट पर माथा टेकता रहता। किसी को अपना गुरू, किसी को बड़ा भाई, किसी को अपना भाग्य विधाता कहकर असेम्बली और कौंसिल में जाने की सदैव इच्छा प्रकट करता रहता था। खुशामद करने में तो इसने कमाल प्राप्त कर लिया था। जिस बड़े नेता के पास जाता दोनों हाथ जोड़कर उसके पैरों पर गिर जाता। कुछ ऐसे नेता भी थे जिन्हें अपने पैर छुआने में आनन्द का अनुभव होता था अतः ऐसे नेताओं से वह कुछ के मुँह लग गया। कुछ ही दिनों में सोम ने इन्हीं में से एक दो नेताओं की खुशामद के पुल बांधकर उनकी पार्टी से विधान सभा का टिकट प्राप्त कर लिया। बिल्ली के भागों से छींका टूटा और सोम उस पार्टी की सहायता से विधान सभा का सदस्य भी चुन लिया गया। कुछ ही दिनों में जिस पार्टी से सोम चुना गया था उसका मन्त्रिमण्डल भी बन गया। सोम तो अपने

[illegible] था कि [illegible] मन्त्रिमण्डल में जाने की इच्छा से बेचैन हो उठा। सोम को उसके दल के नेताओं ने समझाया भी कि अभी वह मन्त्रिमण्डल में शामिल होने की अधिक दौड़ धूप न करे क्योंकि वह बिल्कुल नया विधायक है, और वह बिल्कुल युवावस्था में है, किन्तु सोम को चैन कहां। उसने मन्त्रिमण्डल में शामिल होने के लिये दिन-रात एक कर दिया और वह इसी उद्देश्य से सुबह से शाम तक पागलों की प्रकार नेताओं के दरवाजे के चक्कर काटता रहता था। आखिर जब उसने यह देखा कि उसके प्रयास सफल नहीं हो रहे है, तो उसने अपने दल के मन्त्रिमण्डल को गिराने के लिये दूसरे दलों से साजिश करना आरम्भ करदी। सोम जिस दल का सदस्य था उस दल का बहुमत केवल दो ही चार सदस्यों से था। अतः सोम अवसर पाकर अपने दल को छोड़कर दूसरे दल में जा मिला। दूसरे दल के नेताओं को तो सोम जैसे दल बदलुओं की ही आवश्यकता थी, अतः सोम और एक दो और दलबदलुओं के कारण पुराना मन्त्रिमण्डल गिर गया और नया स्थापित हुआ। सोम क्योंकि अपने दल को बदलकर केवल सरकार में शामिल होने को ही आया था, अतः उसे भी उपमन्त्री बना दिया गया।

सोम उपमन्त्री क्या बना, उसे ऐसा लगा जैसे कि समस्त संसार की दौलत और बादशाहत उसे ही प्राप्त हो गई हो। वह आपे से बाहर अपने ही गांव और जिले के लोगों पर रोब गांठना और जिन लोगों ने या जिस दल ने सोम को टिकट देकर विधान सभा का सदस्य बनाया, उनमें से यदि कोई उसे कहीं रास्ते में मिल जाता तो सोम उनसे मुँह फेरकर निकल जाता था। जिन लोगों ने चुनाव में उसे रुपये पैसे या आदमियों की सहायता प्रदान की, सोम उल्टा उन्हीं को नीचा दिखाने की योजनायें बनाने लगा। सोम की इन गिरी हुई और जलील हरकतों से सभी अच्छे और प्रतिष्ठित लोग उसे दिल ही दिल में बुरा और निकम्मा कहते किन्तु गुन्डे, चापलूस और स्वार्थी व्यक्ति सोम को प्रातः

काल से सायंकाल तक चारो ओर से घेरे रहते और उसकी खुशामद की बडी बडी रेत की दीवारे खडी करते रहते थे। सोम ऐसे चापलूस और स्वार्थी लोगों की खुशामद मे अपनी हैसियत को ऐसा भूला कि उसे उन्ही की लच्छेदार बातो मे आनन्द अनुभव होने लगा।

अब जब से सोम उपमन्त्री हुआ उसमे बदला लेने की भावना भी तीव्र हो उठी। ऐसे समस्त व्यक्तियो से उसने बदला लेने की ठान ली जिनसे कभी भी उसकी व्यक्तिगत दुश्मनी, रंजिश या झगडा रह चुका था। उसने अपने पद का दुरुपयोग करके उनमे से बहुतो पर पुलिस मे कहकर झूठे चालान करा दिये और उन पर मुकदमे चला दिये। कितने ही उसके विरोधियो को जेल का मुँह देखना पडा। उसके कितने ही बेचारे नौकरी से निकाले गये और बेरोजगार होकर अपने बीबी बच्चो के पालन-पोषण से भी वंचित रह गये। उसके समस्त गुन्डे और बदमाश साथी जिनमे कुछ हिस्ट्रीशीटर, कुछ शराबी, कुछ चोर बाजार करने वाले और कुछ पुलिस के दलाल थे गुलछर्रे उडाते फिरते थे। वह सोम के उपमन्त्री के नाम को सरेआम बेचते फिरते थे। जनता से रुपया ऐठने में उनके पौबारे थे। किसी को मोटर लारी का परमिट दिलाने के बदले मे, किसी को कोटा और लाइसेन्स दिलाने के प्रलोभन मे, किसी को कन्ट्रोल और राशन की दुकान दिलाने के लालच मे, मनमाना रुपया वसूल करते। जिसका काम नही भी होता था वह भी बेचारा डर के कारण अपना रुपया लौटाने को कहने का साहस नहीं करता था। इस प्रकार उपमन्त्री के नाम से वह लूटमार आरम्भ होगई कि सज्जन और भले व्यक्तियो का तो उसके क्षेत्र मे रहना ही दूभर होगया। न जाने बेचारे कितने भले और गरीब लोग उपमन्त्री के एजेन्टो और चापलूसो की धमकियो का शिकार बनकर अपना गाव और मकान छोडकर चले गये। कुछ लोगो ने मुख्य मत्री तक उसके कारनामो को पहुँचाने का साहस भी किया, किन्तु मुख्य मन्त्री

पर उसका ऐसा रौब गालिब था कि उल्टा चोर कोतवाल को डांटने वाला उदाहरण हुआ। उसने शिकायत करने वाले सभी व्यक्तियों को वह खरी खोटी सुनाई कि दुबारा किसी का साहस उस तक पहुंचने का नहीं हुआ।

एक दिन सोम अपने कार्यालय में बैठा हुआ अपने खुशामदी और दलालों से बातें कर रहा था कि इतने मे एक नौजवान लड़की जिसकी आयु लगभग १८ या १९ वर्ष के होगी, जिसका रंग गोरा, बड़ी बड़ी आँखे, सुडोल शरीर जैसे कि सौन्दर्य की साक्षात प्रतिमा हो, रोती हुई सोम के कमरे मे पहुँची सोम ने अन्दर से किसी के रोने की आवाज सुनी तो उसने अपने चपरासी से पूछा कि रोने वाली महिला कौन है। चपरासी ने बाहर निकल कर देखा और झट अन्दर जाकर सोम को बता दिया कि कोई लडकी उससे मिलना चाहती है, जो बाहर खड़ी हुई रो रही है। लडकी नाम सुनते ही सोम ने झट चपरासी को उसे कमरे के भीतर बुला लाने को कहा। दरवाजा खुला और लड़की कमरे के भीतर दाखिल हुई। सोम ने नीचे से ऊपर तक लड़की के चेहरे पर निगाह डाली। उसे ऐसा लगा जैसे कोई बिजली के करेण्ट उसके शरीर मे उतर गयी हो। लडकी का सौन्दर्य देखकर उसे ऐसा लगने लगा जैसाकि उसका हृदय ही उसके अधिकार में न रहा हो। एक मिनट तक खामोश रहकर उसने लडकी की ओर देखकर पूछा।

"क्या बात है, तुम कौन हो और क्यो परेशान हो ?"

"श्रीमान, मेरा नाम रुक्मणी है। अभी मेरे विवाह को दो ही वर्ष हुये थे कि मेरा पति मोटर दुर्घटना का शिकार होकर मर गया। अब मैं बालविधवा के रूप मे अपने जीवन को काट रही हूँ।"

"ओह! अब मैं समझा, मुझे तुम्हारी कहानी सुनकर बड़ा दु.ख हुआ। बताइये मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ" सोम ने रुक्मणी की आखो में आखें डालकर पूछा।

श्रीमन ! आप उपमन्त्री हैं, मैं आप ही के ... की एक अभागिन महिला हूँ। आप मेरी दीन दशा पर दया करके मुझे कोई ऐसी नौकरी दिला दीजिये ताकि मैं अपना पेट भर सकूं" रुक्मणी ने नीची निगाहें कर उत्तर दिया।

"लेकिन रुक्मणी ! तुम जानती हो कि आजकल पढ़े-लिखे व्यक्ति नौकरी नहीं पा रहे हैं, फिर तुम को कैसे सरकारी नौकरी मिल सकती है ?"

"श्रीमन ! मैं भी हाई स्कूल पास हूँ"

"ओह, वेरीगुड, तब तो मैं तुम्हें कहीं न कहीं नौकरी दिला दूँगा"

"इसके लिये मैं आपकी सदैव आभारी रहूंगी" रुक्मणी ने आभार प्रकट करते हुए कहा।

सोम दो मिनट तक कुछ सोचता रहा, फिर एक साथ कुछ सोच करके बोला।

"अच्छा रुक्मणी ! मैं शाम तक सोच समझकर तुम्हारे लिये कोई नौकरी तलाश करने की कोशिश करूंगा। तुम शाम को सात बजे के लगभग मुझे मिलना"

"बहुत अच्छा, श्रीमान जी ! मैं आपका कभी एहसान नहीं भूलूंगी"

यह कहकर रुक्मणी चली गई, किन्तु सोम के दिल की गुदगुदी घटने के बजाय बढ़ती ही गई। उसके पास बैठे हुये उसके चापलूस और खुशामदी भी यह समझ गये कि सोम रुक्मणी के सौन्दर्य पर मोहित हो गया है। वह सोम को खामोश देखकर उसके कमरे से उठकर चले गये। उधर सोम विचारों के सागर में उछलता, डूबता इस परिणाम पर नहीं पहुँच रहा था कि रुक्मणी को प्राप्त करने के लिये वह क्या साधन जुटाये। उसका मन किसी काम में नहीं लग रहा था। यदि कोई कर्मचारी कोई कागज लेकर उसके कमरे में आता तो वह उसे मना कर देता। वह घण्टों सर पकड़े

गया । कुर्सी पर [illegible] उसके कर्मचारी और [illegible] यह समझे कि शायद उनकी तबियत कुछ ठीक नहीं है। इतने में ही उसने अपने अर्दली को संकेत करके मोटर लाने को कहा। कुछ ही मिनट में ड्राइवर मोटर लेकर आ गया, और सोम अपने कमरे से सीधा घर चला गया। घर में पहुँचकर वह अपने सोने वाले कमरे में जाकर लेट रहा। उसकी स्त्री गायत्री सोम को परेशान देखकर तुरन्त उसके पास पहुँची और उसने सोम की ओर मुड़कर पूछा।

"क्या बात है, आज आप कुछ परेशान नजर आ रहे हैं।"

"नहीं गायत्री ! ऐसी कोई बात नहीं है, कुछ सर में दर्द हो रहा है"

"तो आप थोड़ी देर आराम कर लीजिये।"

"हाँ, मैं भी यही सोच रहा हूँ, तुम किसी को मेरे पास मत आने देना।"

"बहुत अच्छा"

यह कहकर गायत्री चली गई। सोम अपना मुँह लपेटकर चारपाई पर पड़ रहा। वह बड़ी बेचैनी से शाम के सात बजे का इन्तजार करने लगा। कब रुक्मणी आये और कब वह उसके सौन्दर्य से अपनी आँखें सेके। इसी उधेड़ बुन में शाम हो गई। उधर उससे मिलने के लिये उसके खुशामदी बराबर आते रहे, किन्तु गायत्री सबको वापस करती रही। सायंकाल के सात बजने वाले थे। सोम ने उठकर हाथ मुँह धोया और वह ऊपर कमरे में चला गया। उसने अपने चपरासी को बुलाकर कह दिया कि दोपहर जो लड़की उसके दफ्तर में आई थी वह पुनः सात बजे आयेगी और उसे वह ऊपर उसके पास भेज दे।

ठीक सात बजे चपरासी बाहर से रुक्मणी को लेकर ऊपर वाले कमरे में सोम के पास पहुँचा। रुक्मणी ने दोनों हाथ जोड़कर उपमन्त्री को नमस्ते की। उपमन्त्री ने रुक्मणी को इशारे से सामने पड़ी कुर्सी पर बैठने को कहा। रुक्मणी अपनी निगाहों को नीचा करके कुर्सी पर

बठ गई । सोम ने नीच म ऊपर तक रुकमणी को दखा और उसे ऐसा लगा कि रुकमणी का सौन्दर्य उस अपनी ओर खीचे लिते जा रहा है। उसने दो मिनट चुप रह कर रुकमणी की ओर देखते हुए कहा।

"रुकमणी ! मैने अपने विभाग के द्वारा तुम्हारी नौकरी की बहुत कोशिश की किन्तु मुझे सफलता नहीं मिली"।

"फिर क्या होगा। क्या मुझे निराश लौटना पडेगा" रुकमणी ने आखो मे आसू डबडबाते हुये कहा।

"नही रुकमणी ! मैं तुम्हे निराश नही करु गा। उसके लिये मैंने एक रास्ता निकाल लिया है"।

"आपने बडी कृपा की"

"आपकी दया होगी ! रुकमणी ने आभार प्रकट करते हुये कहा।

"और देखो रुकमणी ! यदि तुम्हारे पास किराये का मकान हो तो तुम उसे छोडकर यही मेरे मकान मे आजाओ मैं तुम्हे छत पर एक कमरा दे दूगा।

"नही सरकार ! मकान तो मेरे पति का है उस में ऊपर के भाग मे मै रहती हूँ नीचे एक किरायेदार है। जो तीस रुपये मासिक किराया देते है। अब तक उसी किराये में गुजर बसर करती रही हूँ।"

"अच्छा तो ठीक है ! कल से तुम सायकाल ७ बजे से रोजाना बच्चो को पढाने आ जाया करना।"

"रुकमणी जी अच्छा" कहकर चली गई। उधर जाते समय गायत्री की निगाह रुकमणी पर पड़ी। उसने ऊपर के कमरे मे पहुँच कर सोम से पूछा।

"क्यो जी ! यह लड़की कौन थी जो अभी ऊपर से गई है।"

"गायत्री ! कुछ न पूछो, बेचारी गरीब बिधवा थी। मुझे उस पर रहम आ गया। मैंने उसे कल से बच्चों को पढ़ाने को कह दिया हैं।"

'किन्तु बच्चो को जो मास्टर साहब पढाने आते है। उनका क्या होगा'

गायत्री ! डिप्टी मिनस्टर के बच्चे होनहार बनने चाहिये। मास्टर साहब सुबह को और वह लडकी शाम को बच्चो को पढायेगी'

गायत्री सोम की बात सुनकर खामोश होकर नीचे चली गई। उधर सोम का यह हाल था कि रुक्मणी के इन्तजार मे उसे एक एक घडी एक दिन जैसा मालूम होने लगा। दूसरे दिन सोम अपने दफ्तर मे गया तो वहाँ उसका दिल किसी काम करने को नही लगा। मिलने वालो को भी उसने मना करा दिया। जितने उसके खुशामदी पिट्ठू थे उनसे भी उसने कोई रुचि बात करने मे नही ली कुछ देर बैठ कर सभी इधर उधर हो गये सोम के मेज पर सभी फाइले वैसी की वैसी ही रक्खी रही। वह चार बजे से पहिले दफ्तर से घर चला गया। घर पहुँच कर सोम चाय नाश्ता से निविर्त होकर ऊपर के कमरे मे जा बैठा और अपने चपरासी से सभी आने जाने वाले लोगो को उसके पास तक आने से मना कर दिया।

ठीक सायकाल के सात बजे रुक्मणी सोम के घर पहुची। चपरासी उसे ऊपर के कमरे मे ले गया जहा सोम बैठा था। रुक्मणी ने सोम को दोनो हाथ जोडकर नमस्ते की। सोम ने रुक्मणी को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और चपरासी को नीचे से बच्चो को बुलाने का आदेश दिया। बच्चे अपनी किताबे लेकर आगये और रुक्मणी ऊपर कमरे के आगे बराडे में बैठी हुई पढाती रही। एक घन्टे तक पढाने के बाद जब घडी मे ८ बजने की टन-टन की आवाज हुई, रुक्मणी ने बच्चो को छुट्टी देकर स्वय नीचे जाने को तैयार हुई। सोम अन्दर बैठा लगातार रुक्मणी के सौन्दर्य से अपनी आखो की प्यास बुझा रहा था। उसने अहिस्ता से रुक्मणी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहा।

"रुक्मणी बात सुनो"

रुक्मणी ने नीची निगाहो से सोम की ओर देखकर कहा।

(

'श्रीमान जी ! क्या आज्ञा है'

"रुक्मणी मैं तुम से बहुत प्रसन्न हू कि तुमने बच्चों को बहुत अच्छे प्रकार से पढ़ाया"

"यह आपका ही आशीर्वाद है"

"रुकमणी ! मैं एक दो बाते इन बच्चों की पढ़ाई के सम्बन्ध मे तुम से और करना चाहता हूँ"

"आज्ञा कीजिये"

"अन्दर आकर ध्यान पूर्वक सुनो"

रुकमणी कमरे के भीतर चली गई। कमरे में घुसते ही सेठ ने रुकमणी का हाथ पकड़कर उसे गले से लगाना चाहा, किन्तु रुकमणी ने पीछे हटकर अपने हाथ को छुड़ाते हुये क्रोध में भरकर कहा।

"यह आप क्या कर रहे हैं"

"रुकमणी मैं तुम से प्यार करता हूँ"

"माफ कीजिये ! मै आपको ऐसा नहीं समझती थी। मैं तो आपको एक सज्जन नेता समझकर आपकी शरण मे आई थी"

रुकमणी ! इसमे क्या बुराई है। तुम्हारी यह जवानी न जाने कहा जाकर टकरायेगी। उससे पहिले अगर तुम मेरी बाहों म आकर बैठ जाओ तो तुम्हारे भी सारे दुःख दूर हो जाय और मेरी आशाओ के फूल भी खिल उठेंगे।

"आप को शर्म आना चाहिये। आप बीबी बच्चो वाले होकर एक गैर स्त्री से इस प्रकार नैतिकता से गिरी हुई बातें कर रहे हैं"

"रुकमणी ! तुम अपने आपे को भूलकर मेरे सर-पर चढती जा रही हो। तुम्हे यह पता नही कि मैं एक उप-मन्त्री हूँ और सरकार का हर अधिकारी मेरे इशारे पर नाचता है। अगर मैंने किसी को इशारा भी कर दिया तो तुम्हारा पता भी नहीं चलेगा कि तुम कहाँ समा गई'

'उप मन्त्री जी ! आप भले ही सरकार हो किन्तु आप भगवान नहीं हो सकते । मैं अब तक भगवान के भरोसे पर जिन्दा हूँ आप की सहायता के बिना भी जिन्दा रहूँगी'

"तो तुम अपनी जिद को नहीं छोड़ोगी" सोम ने आंखें लाल करके कहा ।

"आप मुझे जाने दीजिये वरना मैं ऐसा शोर मचाऊंगी कि आप की इज्जत मिट्टी में मिल जायेगी"

शोर का शब्द सुनकर सोम कांप गया । उसे यह भय था कि कहीं उसका यह राज उसकी स्त्री और उसके घर वालों पर न खुल जाय । अत वह उस समय तो शान्त हो गया । रुकमणी आंखों में आंसू डबडबाये हुये छत से नीचे उतर कर अपने घर चली गई । किन्तु सोम के दिल की आग और अधिक भड़क उठी और अब उसने यह ठान लिया कि उसे कुछ भी क्यों न करना पड़े वह रुकमणी को या तो अपनी इच्छाओं की तृप्ति के लिये मजबूर करके रहेगा या फिर उसे उसकी गुस्ताखी का मजा चखायेगा । सोम इसी उधेड़ बुन में पड़ा रहा । रात भर चारपाई पर रुकमणी के ख्याल में इधर से उधर करवटें बदलता रहा । सुबह होते ही चाय नाश्ते से फारिग होकर उसने अपने एक-दो चापलूसों को बुलवाया । उनसे उसने अलग में सलाह की और रुकमणी को हर कीमत पर आत्म समर्पण करने की योजना बनाने का आदेश दिया । सोम के इन साथियों में एक हिस्ट्रीशीटर भी था । जिसका अनेकों बार चोरी, डकैती और बदमाशी में चालान हो चुका था । किन्तु हरबार वह गवाहों को डरा धमका कर तोड़ लेता था और छूट जाता था । अब जब से वह सोम की चापलूसी करने वाले गिरोह में दाखिल हुआ तब से तो वह और अधिक सीना तान कर बाजार में निकलने लगा था । सब लोग जानते थे कि यह नगर का छटा हुआ गुन्डा है किन्तु कोई उसकी ओर उंगली उठाने का साहस नहीं रखता था । क्योंकि उसे उप-मन्त्री का संरक्षण प्राप्त था । सोम की बात सुनते ही उसने सीना तान कर कहा ।

"सरकार ! इतनी छोटी सी बात के लिये आप परेशान है। अगर आप हुक्म दे तो मै रुकमणी को चारपाई सहित उठा लाऊ और आपके कदमो मे डाल दू"।

"मुझे तुम से ऐसी ही उम्मीद थी, लेकिन इन सब बातो की खबर किसी को कानो कान नहीं होना चाहिये" सोम ने आहिस्ता से कहा।

"नही सरकार! आपको डर क्या है। हमारा कौन क्या बिगाड लेगा। हम सरकार हैं! सब सरकारी नौकर हमारे तावेदार है।" गुन्डे ने मूछो पर ताव देकर कहा।

"फिर भी हमे सतर्क रहकर काम करना चाहिये"

"बहुत अच्छा सरकार! आप सिर्फ एक हफ्ता की मोहलत दीजिये। इसी बीच मे आप देखे रुकमणी आपके कदमों को चूमेगी"

सोम ने उस गुन्डे की पीठ बडे प्यार से ठोकते हुए उसे शाबासी दी। वह गुन्डा सोम के पैर छूकर बाहर निकला। वह वहा से सीधा रुकमणी के मकान पर पहुँचा। रुकमणी अकस्मात अपने किसी रिश्तेदार के घर चली गई थी। उसके मकान के नीचे जो किरायेदार रहते थे, उस गुन्डे ने दरवाजे पर धक्का दिया तो किरायेदार निकल कर आया। वह उस गुन्डे को जानता था कि यह नगर का सबसे बडा बदमाश है। वह यह भी जानता था कि उसे उप-मन्त्री का सरक्षण प्राप्त है। वह उसे देखकर डर से कापने लगा उसने डरते हुये पूछा।

"कहिये आप किस की तलाश मे आये है।"

"आपके यहा कोई रुकमणी नाम की लडकी है"

"जी हा! वही तो इस मकान की मालिक है हम तो किरायेदार है"

"वह कहा है"

"वह कहीं अपने किसी रिश्तेदार के घर चली गई है शाम तक लौटेगी"

"ठीक है तो मैं शाम को ही उससे बात कर लू गा"

यह कहकर वह गुन्डा चला गया। किरायेदार महाशय मे इतना साहस कहा था जो यह पूछते कि रुकमणी मे वह क्या बात करना चाहता है। सायकाल को लगभग सात बजे जब रुकमणी वापस आई तो किरायेदार ने उसे सब कुछ बताया। रुकमणी समझ गई कि इस गुन्डे को उप-मन्त्री ने भेजा होगा। उसे अब अपनी इज्जत आबरू बचाने का कोई रास्ता दिखाई नही दे रहा था। वह ऊपर जाकर खूब सिसक २ कर रोई। अभी वह रो ही रही थी कि वह गुन्डा आ गया और किरायेदार ने ऊपर रुकमणी को जाकर आहिस्ता से आवाज देकर कहा।

"रुकमणी बेटी ! वही गुन्डा नीचे खडा तुम्हे बुला रहा है।"

"रुकमणी ने एक मिनट सोच कर किरायेदार से कहा"

"चाचाजी ! आप उससे कह दे कि रुकमणी की तबियत खराब हो गई है और वह नीचे आने मे मजबूर है।"

किरायेदार ने उससे नीचे जाकर कह दिया। किन्तु उस गुन्डे को कहा विश्वास था; उसने किरायेदार से कहा कि वह ऊपर रुकमणी को देखना चाहता है। किरायेदार ने झट रुकमणी को खबर दी कि वह गुन्डा ऊपर उसे देखने आ रहा है। रुकमणी झट चारपाई पर पड गई और जोर २ से कराहने लगी। ताकि वह गुन्डा समझ जाय कि वास्तव मे रुकमणी की तबियत खराब है। ज्यो ही गुन्डा ऊपर आया रुकमणी और जोर जोर से कराहने लगी। गुन्डा यह समझा कि वास्तव मे रुकमणी बीमार है। गुन्डा उसे देख कर चला गया उधर रुकमणी यह समझ गई कि अब उसे अपनी आबरू बचाना कठिन ही नहीं वरन असम्भव है। बहुत कुछ सोच विचार कर उसने दिल में यही ठान लिया कि वह आत्म हत्या करले। उसने एक कागज निकाल कर कुछ लिखा और तत्पश्चात आधी रात के लगभग उसने अपनी पहिनने की एक धोती को छत के कुण्डे मे बाधा और धोती का फन्दा अपने गले मे डाला। इस प्रकार उसने फासी खाकर आत्म हत्या करली।

दूसरे दिन जब बहुत दिन चढ़ गया और रुकमणी को किरायेदार और उसकी स्त्री ने नहीं देखा तो वह यह समझे कि शायद रात्रि को देर तक जागने और परेशान रहने के कारण वह अभी तक सो रही हो किन्तु जब दोपहर हो गया तो किरायेदार और उसकी स्त्री को कुछ चिन्ता हुई दोनों ऊपर गये। अन्दर से दरवाजा बन्द था। दोनों ने दरवाजा खटखटाया जब रुकमणी नहीं बोली तो किरायेदार ने पीछे खिड़की की दराज में से झांककर देखा। रुकमणी लटकी हुई थी। उसकी जबान बाहर निकली हुई थी। किरायेदार हक्का बक्का रह गया। उसने अपनी स्त्री से घबराकर कहा।

"अरे ! यह क्या हो गया ? रुकमणी ने फांसी खाली"

किरायेदार की स्त्री फूट २ कर रोने लगी। किरायेदार भागा हुआ कोतवाली पहुँचा और उसने पुलिस को सूचना दी पुलिस अधिकारी भागे हुये रुकमणी के घर पहुँचे। उन्होंने सिपाहियों को दरवाजा तोड़ने का आदेश दिया। कमरे का दरवाजा तोड़ा गया। रुकमणी की लाश को फांसी से उतारा गया। जब उसकी लाश पोस्टमार्टम को भेजी गई तो उसकी धोती में एक कागज का पर्चा बंधा हुआ निकला उसमें लिखा था।

"मैं एक पागल कुत्ते से बचने के लिये अपने जीवन की आहुति दे रही हूँ। वह पागल कुत्ता कई दिनों से मुझे काटने को दौड़ रहा है। अब तक मैं उससे पीछा छुड़ाती रही किन्तु अब उससे बचना असम्भव हो गया। वह पागल कुत्ता इसी क्षेत्र का एक उप-मन्त्री है जो मनुष्य के रूप में शैतान जैसी मनोवृत्ति से मुझ जैसी अबलाओं का सतीत्व लूटता फिरता है। मेरा दावा उसी पर है और किसी पर नहीं।"

वह पर्चा पुलिस ने सरकार में भेज दिया किन्तु "सैंया भये कोतवाल हमें डर काहे का" सोम के विरुद्ध कोई मुकदमा नहीं चला। किन्तु उस पर्चे की शोहरत सारे नगर और क्षेत्र में हो गई। और तब से सोमसिंह पागल कुत्ता के नाम से तमाम क्षेत्र में प्रसिद्ध हो गया। दो साल के भीतर सरकार



का भी पतन हो गया। और अब नोम पुनः चुनाव में खड़ा हुआ। काफी धन और दौलत खर्च करने के बाद भी उसकी जमानत जब्त हो गई क्योंकि जनता में उसके विरुद्ध घृणा उत्पन्न हो गई और लोग उसे पागल कुत्ता कहकर पुकारने लगे।

अब वह अपने नगर में धन और दौलत खोकर सड़कों पर इधर से उधर जूतियां चटखाता फिरता है। यदि सुबह किसी गली या सड़क पर कोई उसका मुंह भी देख लेता है तो उसकी जुबान से यही शब्द निकल पड़ते हैं। "आज सवेरे कमबख्त पागल कुत्ते का मुंह देख लिया न जाने आज क्या नहूसत आये और रोटी भी नसीब हो या नहीं।"

कीमती इन्साफ

मंगला का पति धनेश यथा नाम तथा गुण वाला ही व्यक्ति था। धनेश के बाप तो कुछ अधिक पूंजी छोड़ नहीं गये थे किन्तु धनेश एक छोटे से व्यापार में ही ऐसा सफल हुआ कि देखते ही देखते वह अपने नगर का नगरसेठ बन गया। मंगला को यह स्वप्न में भी ख्याल नहीं था कि उसकी झोंपड़ी महलों में बदल जायगी। वह तो एक मामूली घर की लड़की थी, और जब उसका विवाह धनेश से हुआ था तो धनेश के पास भी एक जनरल मर्चेन्ट की दुकान के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था। शादी के बाद धनेश ने एक पेट्रोल पम्प की एजेन्सी ले रखी थी और उस पेट्रोल पम्प की ग्राउण्ड में ही धनेश ने छोटा सा मोटरों की मरम्मत करने का कारखाना खोल लिया। इन दोनों धन्धों में धनेश की किस्मत ऐसी चमकी कि कुछ ही दिनों में उसे मोटरों की एजेन्सी मिल गयी और इस व्यवसाय में धनेश को छप्पर फाड़ कर ऐसी माया मिली कि वह लखपति बन गया। उसने नगर के बाहर सिविल लाइन्स में एक ऐसा सुन्दर बंगला बनवाया कि अकसर लोग धनेश से मिलने आते तो उसके बंगले की खूबसूरती को ही टक-टकी बांधकर देखते रहते थे। मंगला तो यह सोचती थी कि भगवान ने उसे न जाने किन पुण्यों का बदला दिया है। इसीलिये जब से वह अपने पुराने मकान को छोड़कर सिविल लाइन्स के बंगले में पहुंची थी रोज सुबह शाम मन्दिर में जाकर भगवान का पूजन करती और उसका लाख २ धन्यवाद देती।

धनेश और मंगला को सब कुछ सुख और विलास के होते हुये भी एक बहुत बड़ा दुःख था और वह यह कि उनके कोई सन्तान नहीं थी। उनके विवाह को दस वर्ष से भी अधिक बीत चुके थे किन्तु कोई बच्चा नहीं हुआ। दोनों ने न जाने कहां २ साधु सन्तों और मन्दिरों की खाक छानी, मिन्नतें मांगी, जप और पाठ कराये किन्तु उनकी आशाओं के फूल

नहीं खिले। दोनों इस चिन्ता में सदैव बेचैन रहते थे और उन्हें कोई रास्ता दिखाई नहीं देता था जिस पर चलकर वह अपनी मनोकामना पूरी कर सके। अकस्मात एक दिन जब वह एक समाचार पत्र पढ़ रहे थे तो उन्होंने किसी डाक्टर का विज्ञापन पढ़ा जिसका शीर्षक था।

"सन्तान न होने वाले को खुशखबरी"

इसी शीर्षक में नीचे यह दिया हुआ था कि जिन लोगों के सन्तान पैदा नहीं होती है, वह यदि डाक्टर साहब से जिनका कुछ नाम दिया हुआ था परामर्श ले और अपना इलाज कराये तो अवश्य सन्तान होगी।

इस विज्ञापन को पढ़ने के पश्चात दोनों ने इरादा किया कि वह उन डाक्टर महोदय के पास जावेंगे जिन्होंने यह विज्ञापन निकलवाया है। अत चाय और नाश्ता करने के पश्चात मगला और धनेश दोनों ही डाक्टर साहब के पास गये। डाक्टर ने मगला और धनेश की बातों को बड़े ध्यान पूर्वक सुना और उन्हें इस बात का आश्वासन दिया कि यदि वह उनके द्वारा दी गई दवाओं का विधिवत सेवन करेंगे तो अवश्य ही सन्तान उत्पन्न होगी। मंगला और धनेश दोनों ने डाक्टर साहब से दवा ली और जिस प्रकार डाक्टर ने उससे सेवन करने को कहा, दोनों ने लगातार तीन महीने तक डाक्टर साहब की दवा का सेवन किया। तीन महीने के पश्चात मंगला गर्भवती हो गई और उसने डाक्टर के प्रति बड़ा आभार प्रकट किया। कुछ महीनों बाद मगला ने पुत्र को जन्म दिया। जिस दिन मगला के पुत्र का जन्म हुआ धनेश और मंगला दोनों के हर्ष की सीमा न थी। धनेश ने अपने पुत्र के नामकरण संस्कार को बड़ी धूमधाम से मनाया और नगर के लगभग सभी अधिकारी नेता और धनीमानी व्यक्तियों को प्रीतभोज में आमन्त्रित किया।

नामकरण संस्कार में लड़के का नाम पडितों ने राशिक्रम और नक्षत्र के अनुसार राकेश रक्खा। मगला और धनेश ने राकेश को बड़े लाड़ प्यार से पाला और उसके लिये सभी प्रकार के साधन जिससे उसको सुख मिले उपलब्ध किये। जब राकेश ने होश सम्भाला तो उसका दाखिला एक

अच्छे मान्यता प्राप्त स्कूल में [illegible] दिया गया जहाँ राकेश ने [illegible] से प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। जितना ही राकेश आयु में बढ़ता गया उतना ही उसका लाड प्यार भी बढ़ता गया। परिणाम यह हुआ कि राकेश की आदतें घर के ऐशो आराम तथा अधिक लाड प्यार के कारण बिगड़ती गई और वह हाई स्कूल में ही कई वर्ष तक फेल होता रहा। जब उसे हाई स्कूल की परीक्षा में फेल होते हुये कई वर्ष हो गये तो राकेश के मां बाप ने यह समझकर कि राकेश को स्कूल भेजना अपने धन और राकेश के समय का दुरुपयोग है, राकेश को स्कूल छुड़ाकर घर के काम काज देखने को कहा। राकेश को स्कूल से छुटकारा मिलने के पश्चात तो पूरी आजादी मिल गई और अब वह घर का काम काज देखने के बजाय सुबह से शाम तक चार दोस्तों के साथ आवारा घूमता रहता था। राकेश में वह सभी आदतें उत्पन्न हो गईं जो आवारा लड़कों में होती हैं। राकेश का बाप धनेश और उसकी मां मंगला दोनों राकेश की आदतों को देखकर चिन्तित रहने लगे। आखिर दोनों ने बहुत कुछ सोच विचार कर यही उचित समझा कि राकेश का शीघ्र से शीघ्र विवाह कर दिया जाय।

राकेश एक धनी बाप का बेटा था। उसके लिए विवाह की क्या कमी थी। जैसे ही लोगों को मालूम हुआ कि राकेश के पिता राकेश का विवाह करना चाहते हैं, लड़की वालों के आने जाने का धनेश के यहाँ तांता लग गया। न जाने लड़कियों के कितने फोटो इकट्ठे हो गये। कुछ ही दिनों में धनेश और मंगला दोनों ने राकेश की इच्छानुसार एक सुन्दर युवती रूपा से राकेश का विवाह निश्चित कर दिया। रूपा भी एक धनी साहूकार की लड़की थी और उसके मां बाप ने भी उसे बड़े लाड प्यार से पाला था। वह गरीब लोगों से नफरत करती थी और ऐसा समझती थी जैसे गरीबों को अमीरों की सेवा के लिए ही भगवान ने पैदा किया है। वह अपने मां बाप के यहां भी नौकर चाकरों पर ऐसी हुकूमत चलाती थी कि बेचारे सभी नौकर उसके डर से कांपते ही रहते थे। धनी परिवार की लड़की होने के

माने रूपा को किसी काम काज से तो मतलब ही नहीं था। वह तो केवल खा लेना और आराम करना ही जानती थी।

रूपा और राकेश का विवाह बड़ी धूमधाम से हुआ। मंगला और धनेश का राकेश इकलौता बेटा था इसलिये उन्होंने शादी के अवसर पर ही रूपा को सोने के आभूषणों से लाद दिया। रूपा और राकेश दोनों भोग विलास में ही मस्त रहते। उन्हें यह भी पता नहीं रहता था कि घर में क्या हो रहा है। बेचारे धनेश सुबह से शाम तक अपने व्यापार में व्यस्त रहते। नौकर चाकरों पर ही उनका भी सारा काम चलता। राकेश को तो किसी काम से कोई मतलब ही नहीं था। वह तो केवल खर्च करना ही जानता था। वह हाई स्कूल भी पास न था किन्तु उसकी पोशाक को देख कर ऐसा लगता था जैसे कि कोई बड़ा शिक्षित या कालिज का छात्र है। तड़क भड़क का टाइट सूट, गले में नेक टाई, [illegible] जैसे कलात्मक बाल और मुँह में हर समय सिगार लगा रहता था। रूपा का हाल तो और भी अधिक न्यारा था। उसे तो सुबह से शाम तक बनाव शृङ्गार करने-होंठों पर लिपस्टिक लगाने और दिन में कई बार पोशाक बदल बदलकर अपना प्रदर्शन करने से ही अवकाश नहीं मिलता था। रूपा और राकेश दोनों फैशन के पुतले बने हुये हर नाच, रंग और गाने बजाने की महफिल में दिखाई पड़ते थे। धनी परिवार के होने के नाते उनके पास नगर के सभी उत्सवों के निमन्त्रण पत्र आते थे। फिर रूपा और राकेश दोनों ही ऐसी संस्थाओं को मुँह मांगा चन्दा देते थे। इसलिए ऐसी महफिलों में उनको और भी आमन्त्रित किया जाता था।

रूपा और राकेश दोनों वर्षों इस प्रकार भोग और विलास में अपना जीवन व्यतीत करते रहे। धनेश और मंगला अब बूढ़े हो चुके थे। धनेश को इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि उनके पश्चात उनका कारोबार राकेश कैसे सम्भालेगा। इसी चिन्ता में अक्सर वह कुढ़ते रहते थे। उन्हें अब सोच

का रोग उत्पन्न हो गया। अक्सर वह बेहोश हो जाते और घन्टो बेहोश रहते। मगला बेचारी धनेश की इस बीमारी से चिन्तित रहती और कभी कभी घन्टो रोती रहती थी। मगला ने बडे बडे डाक्टरो को बुलाकर धनेश का इलाज कराया किन्तु मर्ज बढता गया ज्यो ज्यो दवा की।

आखिर लम्बी बीमारी के पश्चात धनेश का देहान्त हो गया। मगला बेचारी सर पीटती और छाती कूटती ही रह गई। वह विधवा हो गई। उसके पास जितने आभूषण और अच्छे और सुन्दर वस्त्र थे वह उसने सब रूपा को दे दिये। रूपा और राकेश को धनेश की मृत्यु से जरा भी दुख न हुआ बल्कि वह तो यह समझे कि उनकी आजादी मे चार चाद लग गये। अब रूपा और राकेश की सैर तफरीह और फैशन और भी अधिक बढ़ गई जिसका परिणाम यह हुआ कि धनेश अपने पीछे जो कारबार छोड गया था। वह भी ठप हो गया। बेचारी मंगला जब कभी राकेश से कारबार सम्भालने को कहती तो राकेश और रूपा दोनो एक जुबान होकर उलटे मगला पर ही बरस पडते थे। और उसे बुरी प्रकार से डाँटते थे। जो कुछ रुपया पैसा धनेश छोड गया था वह राकेश ने अपने अधिकार मे कर लिया। बेचारी मगला के पास तो फटे पुराने कपडो और मकान को छोडकर कुछ भी न था। अब नौबत यहाँ तक पहुँच गई थी कि रूपा और राकेश मगला को मकान से भी निकालना चाहते थे। किन्तु मगला के सामने समस्या यह थी कि वह कहाँ जाय। उसका तो ससार मे राकेश और रूपा को छोडकर कोई और नही था। वह बेचारी डाँट फटकार बरदाश्त करती किन्तु फिर भी उसी मकान के एक कोने मे पडी अपनी तकदीर को दोष देती रहती थी। जब राकेश और रूपा ने यह देखा कि मगला किसी प्रकार से भी मकान छोड़ने और उनसे अलग होने को तैयार नही है तो रूपा ने मगला से पीछा छुड़ाने की एक तरकीब सोची। उसने राकेश को यह परामर्श दिया कि वह दोनो इस मकान को किसी के हाथ बेच दें और स्वयं रूपा के बाप के यहाँ दोनो जाकर रहे। इस प्रकार मकान को

बेचकर उन्हे जो रुपया मिलेगा उससे वह जीवन भर गुलछर्रे उड़ाते रहेंगे और उनका मगला से पीछा भी छूट जायगा। उन्हे इस बात की तनिक भी चिन्ता न थी कि बेचारी मगला बुढापे मे कहाँ जायगी।

राकेश और रूपा दोनो ने मगला को कानो कान खबर न होने दी और मकान को चालीस हजार रुपये मे बेच दिया। मकान बेचने के दूसरे ही दिन राकेश और रूपा दोनो अपना सारा सामान एक ट्रक मे भरवा कर रूपा के माँ बाप के घर चलने लगे। उस समय मगला मन्दिर मे पूजा करने गई थी। जब वह मन्दिर से लौटी तो उसने देखा कि घर का सारा सामान केवल उसके कपडो और सन्दूक को छोडकर ट्रक मे लदा खड़ा है और रूपा और राकेश जाने की तैयारी मे है। मगला को यह देखकर बडा दु ख हुआ। उसकी आँखो से आसुओ की धारा वह निकली। उसने रोती आवाज मे राकेश की ओर देख कर कहा।

"बेटा राकेश ! यह क्या कर रहे हो, कहाँ जा रहे हो। मुझे किस पर छोड़े जाते हो"

अभी राकेश कुछ कहने ही वाला था कि रूपा ने बीच मे ही बड़ी अकड के साथ उत्तर दिया।

"माँ जी ! हम दोनो जहाँ भी रह सकेगें जा रहे हैं आप जहाँ चाहे जाँयें या रहे। हमने कोई आपके जीवन का ठेका नही लिया है"

"लेकिन मेरा तुम दोनो के सिवा इस ससार मे और कौन है" मंगला ने सिसकते हुये कहा।

"माँ जी ! संसार मे कोई किसी का नहीं होता। इस दुनियाँ मे तो यों ही आना जाना लगा रहता है" रूपा ने मुंह बिगाड़ते हुये उत्तर दिया। और राकेश को सकेत देते हुये कहा।

"चलिये ना, देर हो रही है। आप इनकी बातें कब तक सुनते रहेंगे"

यह कहकर रूपा और राकेश सामान के साथ चले गये। मंगला बेचारी रोती पीटती अकेली घर पर रह गई। अब उसके सामने समस्या यह थी कि वह अपने जीवन निर्वाह के लिये क्या साधन ढूंढे जो सोने चाँदी के आभूषण उसके पास थे वह सब उसने अपने पति धनेश की मृत्यु के पश्चात् रूपा को दे दिये थे। केवल एक दो चीजें उसके कानों में जो वह पहिने हुये थी रह गई थी। उसे यह भी पता नहीं था कि राकेश ने उसका मकान भी बेच दिया है। वह दिन भर यों ही रोती चिल्लाती रही और अपनी किस्मत को कोसती रही। सायंकाल को जब उसे अधिक भूख लगी तो पड़ोस के मकान में चली गई। मंगला की करुण कहानी सुनकर मंगला की पड़ोसिन और उसके पति को मंगला पर रहम आ गया और उन्होंने तुरन्त मंगला को खाने के लिये जो कुछ उनके घर में था लाकर खिला दिया। काफी देर तक मंगला अपनी पड़ोसिन से अपनी दुःख दर्द की बातें सुना सुनाकर रोती और सिसकती रही। उसकी पड़ोसिन ने मंगला को ढाढ़स बंधाते हुये यह परामर्श दिया कि वह अपने मकान को बेचकर उस रुपये से अपना जीवन निर्वाह करे। और कोई छोटा मोटा मकान किराये पर ले ले। उसने मंगला से यह भी कहा कि जब तक उसे कोई मकान नहीं मिलेगा वह एक छोटा कमरा उसे रहने को दे देगी। मंगला ने अपनी पड़ोसिन का इस सहानुभूति के लिये आभार प्रकट किया और उसने चलते समय अपनी पड़ोसिन को बताया कि एक दो दिन में उसके पास आकर मकान को बेचने आदि के लिये उसके पति की सहायता प्राप्त करेगी। पड़ोसिन ने अपने पति की ओर से उसकी पूरी सहायता करने का आश्वासन दिया।

मंगला चिराग जलने के साथ ही पड़ोसिन के मकान से अपने मकान पर पहुँची। जब वह अपने मकान पर पहुँची तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही उसने देखा कि एक धनीमानी व्यक्ति एक मोटर पर बैठे हुये अपने नौकरों

से इस मकान की पानि से नाप शुरू करा रहे है। मंगला ने अपने मकान का ताला खोलते हुये साहूकार के नौकरों की ओर मुड़कर कहा।

"आप लोग कौन है। इस मकान की क्यों नाप कर रहे है"

"हम सेठ जी के नौकर हैं। आप उन्ही से बात कीजिये। हम लोग तो उन्ही के हुकुम से मकान की पैमाइश कर रहे है"

मंगला नौकरों के इन शब्दो को सुनकर तुरन्त हाथ मे ताला चाभी लिये सेठ जी की मोटर की ओर बढ़ी और उसने मोटर के पास पहुँचकर सेठ जी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुये कहा।

"सुनिये! आप कौन है। आपके यह नौकर मेरे मकान की क्यो नाप जोख कर रहे है"

"यह मकान मैंने कल चालीस हजार रुपये मे खरीद लिया है"

"चालीस हजार मे? किससे आपने खरीद लिया। यह मकान तो मेरे पति के नाम मे है। मैं इसकी मालिक हूँ" मंगला ने घबराकर उत्तर दिया।

"आप मालिक है। आप कौन हैं?"

"मैं राकेश की माँ हूँ"

"ओह! अब मैं समझा, लेकिन यह मकान तो मैंने राकेश से ही कल नकद चालीस हजार रुपये मे खरीदा है"

"मगर राकेश को इस मकान को बेचने का कोई अधिकार नही। यह मकान तो मेरे पति के नाम है। इसकी मालिक मैं हूँ"

"यह आप कैसे कह सकती है। हिन्दुओ में तो बाप की सम्पत्ति का मालिक उसका बेटा होता है"

"बिलकुल गलत! आप इस मकान में पैर नही रख सकते। अगर आपने इस मकान को मोल लेने का इरादा किया तो मैं अदालत से आप के खिलाफ चारा जोई करूंगी"

"राकेश की माँ ! अब तो यह मकान हमने खरीद ही लिया है और चालीस हजार नकद दिये है। जहां चालीस हजार खर्च किये वहां दस हजार मुकदमा लड़ने मे भी खर्च कर देंगे। यही समझेंगे कि मकान चालीस मे नहीं बल्कि पचास हजार मे खरीदा है"

मगला और सेठ जी में यह बाते हो ही रही थी कि जब तक नौकरो ने मोटर के पास आकर सेठ जी को बताया कि उन्होंने पैमाइश पूरी करली अतः सेठ जी नौकरो के साथ मोटर पर बैठकर वहा से अपने घर चले गये। बेचारी मंगला जिसकी एक परेशानी दूर नही हुई थी दूसरी परेशानी का पहाड़ उसके सर पर आ टूटा। वह घबराई हुई हालत मे उल्टे पांव फिर अपनी पड़ोसिन के यहाँ लौट गई और उसने सारा हाल उसे सुनाया। पड़ोसिन ने तुरन्त अपने पति को बुलाकर मगला के मकान के सम्बन्ध में सारी बाते बताई। पड़ोसिन के पति एक सज्जन व्यक्ति थे उन्होने मगला को धैर्य बधाते हुए आश्वासन दिया कि वह दूसरे दिन किसी वकील को बुलाकर उसके मकान का बैनामा रद्द कराने के लिये अदालती कार्यवाही करायेंगे। मगला बेचारी उसी परेशानी की दशा मे अपने घर चली गई और दूसरे दिन सुबह होते ही वह फिर अपने पड़ोसी के घर पहुँची। पड़ोसी ने अपने किसी एक मित्र वकील को बुलाया और मंगला का मकान जिस प्रकार राकेश ने सेठ को बेचा था उसे रद्द कराने के लिए अदालत मे चारा जोई भरने को कहा। वकील साहब ने आते ही मगला से मकान के सम्बन्ध मे सारी बातो को सुना और इस बात का आश्वासन दिलाया कि कानून के अनुसार उस मकान में मगला का ही अधिकार है। उन्होंने मगला का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करके कहा।

"इस मकान को बेचने का हक राकेश को बिल्कुल नही था किन्तु उसके द्वारा बेचा गया मकान अदालत मे अवश्य रद्द हो जायगा।"

"वकील साहब। मैं आपकी इस कृपा के लिये सदैव आभारी रहूँगी"

"लेकिन एक बात को सुनिये चालीस हजार की कीमत पर चार हजार

रुपया तो कोर्टि फीस लगाने को ही चाहिये और फिर मेरी फीस तथा अन्य और खर्चे मिलाकर लगभग पाँच हजार रुपये खर्च होंगे"

"वकील साहब ! पाँच हजार रुपये मैं कहाँ से लाऊँगी मेरे पास तो पाँच सो रुपये भी नही है। केवल कानो मे माँ दो माँ के सोने के बुन्दे और हाथों मे मेरे पति की दी हुई एक अगूठी के सिवा और कुछ भी नहीं है।"

"तो फिर यह मुकदमा कैसे दायर हो सकता है। मै अपनी फीस मे कुछ रियायत भी कर सकता हूं किन्तु कोर्टि फीस तथा मुकदमे का खर्च तो हर हालत मे देना होगा"

"वकील साहब ! मेरे पास चार हजार रुपया कहाँ जो मैं कोर्टि फीस लगा सकू । यह कैसा अन्धेर है कि गरीबो को रुपये के बिना अदालत से इन्साफ भी नही मिल सकता" आज के युग मे इन्साफ भी कितना कीमती है"

"हा यह ठीक है ! जब तक आपके पास वकील को देने की फीस नही है और कोर्टि फीस लगाने को पैसा नही है आपको अदालत से इन्साफ नहीं मिल सकता है'

'तो इसका मतलब यह है कि मै अपने मकान से हाथ धो बैठूँ और भिखारिन बन जाऊं"

"इसके सम्बन्ध मे मै क्या कह सकता हू। मै तो आपकी सिर्फ इतनी ही सहायता कर सकता हूँ कि फीस मे आपको रियायत करदूँ"

वकील साहब के इन शब्दो को सुनकर मगला खून का सा घूंट पी कर रह गई। उसके मुह से एक दम "हाय" निकली और वह बिना कुछ कहे सुने ही वहाँ से उठकर चली गई। फिर उसके बाद से अब तक नगर मे मगला को किसी ने नही देखा। न जाने वह कहाँ चली गई। जीवित भी है या मरगई। उसका किसी को कुछ पता नही। नगर में जितने

मुँह उतनी ही बाते मगला के सम्बन्ध मे सुनने को मिलती है। राकेश और रूपा ने भी चालीस हज़ार रुपया कुछ ही वर्षो मे भोग बिलास मे उठा दिया। अब रूपा के माँ बाप का भी देहान्त हो चुका है। रूपा के भाइयो ने रूपा और राकेश को अपने घर से निकाल दिया। वह दोनो भी फटे पुराने कपड़ो मे अक्सर नगर की गलियो मे घूमते दिखाई देते है। जवानी मे ही दोनों बूढे मालूम पडते है। पता नही वह अपनी गुजर बसर कहाँ से और किस प्रकार करते है।

———

थाली के बैंगन

जिस प्रकार वर्षा काल में हजारों नये जीव जन्तुओं का उदय हो जाता है और वर्षा काल के अन्त तक सब नष्ट हो जाते हैं यही दशा भारत में आम चुनावों के समय होती है। न जाने कितने दल और पार्टियाँ नये नये नारे लगाकर वोट मांगने निकल पड़ती हैं। नागेन्द्र भी ऐसी ही पार्टियों के आविष्कार करने में अपने नगर में बड़ा निपुण समझा जाता था। वह न केवल विभिन्न पार्टियों का सदस्य रह चुका था वरन् उसे कई पार्टियों की बुनियाद डालने का भी गौरव प्राप्त था। वह न जाने कितने समय से मन्त्री और मुख्य मन्त्री बनने का स्वप्न देख रहा था, किन्तु उस की मनोकामना कभी भी पूरी न हो सकी। कभी वह अपने भाग्य को कोसता, कभी अपने साथियों की उदासीनता पर झल्लाता, कभी जनता को भला बुरा कहता। सुबह से शाम तक वह इसी उधेड़ बुन में लगा रहता था। उसकी स्त्री श्यामा उसे प्रायः समझाती और घर का काम धन्धा देखने को कहती किन्तु नागेन्द्र बजाय इसके कि अपनी स्त्री के समझाने पर विचार करता, उलटा उसी बेचारी पर बरस पड़ता। श्यामा अपना सा मुंह लेकर चुप हो जाती और दिल ही दिल में कुढ़ने लगती थी

नागेन्द्र का परिवार कोई बहुत बड़ा न था। उसकी स्त्री श्यामा, उस के दो बच्चे, एक लड़की शोभा और एक लड़का नरेश। इन्हीं चार व्यक्तियों का छोटा सा परिवार था। नागेन्द्र के पिता दो मकान छोड़ गये थे। एक में नागेन्द्र अपनी स्त्री बच्चों के साथ रहता था तथा दूसरा तीन सौ रुपये मासिक किराये पर उठा हुआ था। इन्हीं तीन सौ रुपयों से नागेन्द्र के पूरे परिवार का निर्वाह होता था। नागेन्द्र की स्त्री श्यामा बड़ी चतुर स्त्री थी। वह सौ रुपये तो नागेन्द्र को उसके पास उसके जेब खर्च को दे देती और शेष २०० रुपयों से अपने घर का काम काज चलाती। नागेन्द्र का

लड़का तरुण और लड़की गोपी दोनो हाइ स्कूल पास करके कालिज मे प्रवेश कर चुके थे। उन दोनो का खर्चा भी सौ रुपये मासिक से कम न था, किन्तु श्यामा ने किसी न किसी प्रकार कालिज के मैनेजर से मिलकर दोनो की फीस आधी माफ करा रक्खी थी। गोपी, तरुण से लगभग दो या तीन वर्ष बड़ी थी और अब उसकी आयु सत्तरह अठारह वर्ष की हो चुकी थी। श्यामा को गोपी के विवाह की चिन्ता दिन रात बेचैन रखती थी। अब गोपी बी० ए० मे पहुँच चुकी थी इसीलिये एम० ए० पास नही तो बी० ए० पास लड़का से उसका विवाह जरूर होना चाहिये। इन्ही विचारो मे श्यामा कभी कभी रात को देर तक चारपाई पर इधर से उधर करवटे बदलती रहती थी। कुछ ही दिनो बाद परीक्षा आरम्भ हुई और गोपी ने बी० ए० फाइनल और तरुण ने बी० ए० प्रीवियस की परीक्षाये दी। गोपी और तरुण दोनों अपनी अपनी परीक्षाओ मे पास हो गये। उनका परीक्षा फल जिस समाचार पत्र मे निकला उसे लेकर दोनो खुशी खुशी अपने घर आये और दोनो ने अपनी माँ श्यामा के पैर छूकर समाचार पत्र मे अपना रोल नम्बर दिखाते हुये अपनी माँ को अपने पास होने का शुभ सन्देश दिया। श्यामा ने प्रसन्न होकर दोनों की पीठ ठोकी। अभी श्यामा गोपी और तरुण को शाबासी देही रही थी कि नागेन्द्र भी बाहर से आगया। इससे पहिले कि नागेन्द्र कुछ कहता श्यामा ने अखबार को नागेन्द्र को दिखाते हुये स्वयं ही मुस्कराकर कहा।

"देखिये, गोपी और तरुण दोनों पास होगये"

"श्यामा! मैंने पहिले ही अखबार देख लिया" नागेन्द्र ने हसकर उत्तर दिया।

"तो आज इस खुशी मे सत्य नारायण की कथा कहला दीजिये"

"जरूर कहलाओ! श्यामा इस अखबार में एक और खुश खबरी भी छपी है"

"वह क्या" श्यामा ने उत्सक होकर पूछा।

"वह यह कि अगले आम चुनाव की तिथियों की घोषणा भी कर दी गई है"

"हमे आम चुनाव मे क्या लेना है" श्यामा ने मुह बिगाड़ कर कहा।

"श्यामा! इस बार मैं अवश्य चुनाव मे जीतूँगा, मैंने ऐसी योजना बनाई है"

"रहने भी दीजिये! पहिले भी तो आप ऐसा ही कहा करते थे किन्तु कुछ नही हुआ, अपना पैसा भी बरबाद किया। और हार का मुंह भी देखना पडा"

"लेकिन श्यामा! पहिले मैं जिन पार्टियों से खड़ा होता था उनमें से अब मैं किसी पार्टी से खडा नही होऊँगा। अब स्वय मैंने एक नई पार्टी बनाई है। आज से ही उसके मेम्बर बनाना आरम्भ कर रहा हूँ"

'मेरी समझ में नही आता कि आप कितनी पार्टियों को छोड़ चुके हैं। जब पुरानी पार्टियो मे रहकर ही आपको सफलता न मिली तो नई में क्या मिलेगी"

"श्यामा! तुम समझती नही हो, नई [illegible] बनाकर नये प्रोग्राम, नये नारे, नये ढग से छपवाये जायेगे, जो आज तक किसी पार्टी के पास नही है"

"लेकिन आपको मालूम है कि गोपी अब जवान हो गई उसके विवाह की मुझे दिन रात चिन्ता लगी रहती है। कुल तीन सौ रुपये [illegible] के आते हैं, जिसमे सारे घर का खर्चा, बच्चों की पढाई, आखिर गोपी के विवाह मे भी तो दो चार हजार रुपये खर्च होगे उनका प्र[illegible] भी करना है।"

"श्यामा! तुम गोपी के विवाह की जरा भी चिन्ता न करो। आजकल कालिज मे पढने वाली लडकियाँ अपना पति स्वयं ढूढ लेती हैं। माँ बाप को उनके विवाह या विवाह के खर्चे की जरूरत नही पडती"

"यह आप क्या कह रहे है, गोपी ऐसी लड़की नही है"

"अच्छा ! इन बातों को छोडो, अब जरा मेरी एक बात सुनो"

"कहिये"

"पहिले इन बच्चों को बाहर भेज दो"

गोपी और नरेश सकेत पाते ही बाहर चले गये ।

"बताइये आप क्या कहना चाहते है" श्यामा ने नागेन्द्र की ओर देखकर पूछा"

"श्यामा ! मैंने इस बार चुनाव में खड़े होने और जीतने का पक्का इरादा कर लिया है"

"तो मै क्या करू"

"मेरा चुनाव और मेरी जीत तुम्हारे हाथ मे है"

"मैं आपका मतलब नही समझी"

"मेरा मतलब यह है कि मेरे पास चुनाव मे खड़े होने को पैसे नही । मै यह चाहता हूं कि तुम अपने गहने मुझे देदो ताकि मै उन्हे गिरवी रख कर चुनाव लड़ सकू"

"यह आप क्या कह रहे है, चार पाँच हजार रुपये के मेरे गहने है जो आपके पिता ने बनवा दिये थे। आपने तो कभी एक छल्ला भी नही बनवाया । मै उन्हें बचकर गोपी का विवाह करूंगी।"

"श्यामा ! तुम क्या नादान बनती हो, इस बार चुनाव मे जीतने के बाद मीनिस्टरी मिलेगी, फिर तुम जितने चाहो गहने बनवाना, बल्कि हीरे और जवाहरात खरीदना"

"नहीं मै यह गहने आपको गिरवी रखने को नही दूंगी" श्यामा ने आँखो मे आँसू भर कर कहा ।

"श्यामा ! तुम अपने पति का मन्त्री पद पर सुशोभित होना पसन्द नहीं करती, तुम्हे मालूम है कि पुराने जमाने की स्त्रियाँ अपने पति पर सर्वस्व निछावर कर देती थी और उनके साथ सती हो जाती थी। मगर हाय रे कलजुग कि आजकल की स्त्री अपने पति की भलाई के लिये अपने आभूषण भी नहीं दे सकती" नागेन्द्र ने अपना माथा ठोकते हुये कहा।

"आप ऐसा न कहिये ! आप सब गहने ले जाइये। मेरे सब कपड़े ले जाइये, जो आपकी मर्जी हो कीजिये" श्यामा ने झिझकते हुये उत्तर दिया।

"श्यामा ! मुझे तुम से ऐसी ही आशा थी, भगवान ने चाहा तो मन्त्री होते ही तुम्हे गहनों से लाद दूंगा और गोपी का विवाह ऐसी धूम से करूंगा कि उस नगर मे किसी का न हुआ हो"

श्यामा ने झट अन्दर कोठरी मे जाकर अपना सन्दूक खोला और अपने समस्त सोने चाँदी के आभूषण लाकर नागेन्द्र के सामने रख दिये। नागेन्द्र को आभूषण मिलने की देर थी। वह आभूषणों को लेकर सीधा साहूकार की दुकान पर गया और नकद चार हजार रुपये मे आभूषण गिरवी रखकर सीधा अपने इष्ट मित्रों के पास आया। उसने अपने इन्ही मित्रों और साथियों को सम्मिलित करके एक नई राजनैतिक पार्टी का जन्म दिया था। नागेन्द्र ने अपने मित्रों के सहयोग के आश्वासन पर अपने आप को चुनाव मे खड़े होने का ऐलान कर दिया। उसने अपने साथियों की सहायता से नगर मे एक कमरा किराये पर लेकर उसे अपना चुनाव कार्यालय एवं नई स्थापित पार्टी का कार्यालय बनाया और पार्टी का साईन बोर्ड भी लगा दिया।

उधर श्यामा दिन भर उदास बैठी रही। उसकी आँखों से बराबर आँसू निकल रहे थे। जब वह गोपी और तरुण को आता देखती तो झट आँसूओं को पोंछ कर हँसने और मुस्कराने की कोशिश करती। उसने इन

आभूषणों को गोपी के विवाह के लिये सुरक्षित रक्खा था, वह कभी स्वप्न मे भी नहीं सोच सकती थी कि उसे इन गहनो से नागेन्द्र की राजनैतिक हलचलो के कारण हाथ धोना पडेगा। उसने ज्यों त्यो करके अपने दिल को समझाने की कोशिश की। वह रोज सुबह मुहल्ले मे स्थित भगवान के मन्दिर में जाती और भगवान से नागेन्द्र को चुनाव मे विजय प्रदान करने की प्रार्थना करती थी। चुनाव मे नागेन्द्र भी इतना व्यस्त रहने लगा कि दिन २ भर उसकी शकल देखने को नही मिलती थी। कभी २ तो वह रात्रि मे भी नही आता और अपने कनवेसिंग एवं अपने साथियो के साथ चुनाव सम्बन्धी योजनाओ मे ही लगा रहता। श्यामा भी सारे दिन नगर मे घरो के भीतर जाजा कर घर की स्त्रियो से नागेन्द्र के लिये वोट देने की प्रार्थना करती। इस कनवेसिंग मे अकसर श्यामा को नागेन्द्र के सम्बन्ध मे बहुत कुछ बुरा भला भी सुनना पडता था। कुछ स्त्रियाँ नागेन्द्र को थाली का बैंगन कहती, कुछ उसे वे उसूला और स्वार्थी कहती, किन्तु श्यामा किसी न किसी प्रकार उन्हें समझाने की कोशिश करती। नागेन्द्र के मुकाबले मे श्यामा के कनवेसिंग का प्रभाव अच्छा पडता था। मुहल्ले और पास पडोस की स्त्रियाँ तो पहिले से ही श्यामा से सहानुभूति रखती थीं और उसे एक नेक महिला समझती थी। इसीलिये श्यामा जब कनवेसिंग को जाती तो अकेली नही वरन् अपने साथ मुहल्ले की चार छै स्त्रियो को भी ले लेती थी। नागेन्द्र को भी यह पता था कि श्यामा उसके कनवेसिंग मे काफी दौड धूप कर रही है। वह जब कभी घर आता तो श्यामा के इस प्रयत्न की भूरि भूरि प्रशंसा करता था। लेकिन श्यामा सदैव यह कहकर उसकी जबान बन्द कर देती थी।

"चुनाव आपका अकेला का नही बल्कि हम दोनो का है। स्त्री को वैसे पुरुष की अर्धांगिनी कहा गया है, इसलिये चुनाव की सफलता तो दोनो की होगी'

नागेन्द्र श्यामा के शब्दो को सुनकर हस कर चला जाता था।

आखिर चुनाव का दिन आया। कई पार्टियों के चुनाव स्थल पर डेरे और शामियाने लगे। नागेन्द्र ने भी अपनी नई पार्टी का एक छोटा सा शामियाना लगाया। श्यामा, गोपी और तरुण प्रातः काल से ही इस शामियाने में आकर वोटर लिस्ट के अनुसार पर्चियां आदि बनाने में लग गये थे। पोलिंग आरम्भ होने से पहले ही सैकड़ों स्त्रियाँ श्यामा के शामियाने में वोट डालने आगईं। उनमें से कुछ ने वोटरों को समझाने और पर्चियां आदि देने में श्यामा का हाथ बटाना आरम्भ कर दिया। अन्य पार्टियों के उम्मीदवारों को आश्चर्य था कि नागेन्द्र के शामियाने में इतनी अधिक संख्या में स्त्रियाँ क्यों एकत्रित हो रही हैं। पोलिंग आरम्भ हुआ। सैकड़ों स्त्रियों ने लाइन लगाकर पोलिंग बूथ पर नागेन्द्र का वोट डाला। कभी २ तो ऐसा भी देखा गया कि पुरुष किसी दूसरे उम्मीदवार को वोट देते थे किन्तु उनकी स्त्रियाँ अपने पुरुषों की बात न मानकर श्यामा से पर्चा लेकर नागेन्द्र को वोट देजाती थी। नगर की अधिकाँश स्त्रियों ने श्यामा के आवाहन पर नागेन्द्र को वोट दिये। परिणाम यह हुआ कि नागेन्द्र भारी बहुमत से विजयी घोषित हुआ। चुनाव स्थल से घर तक नागेन्द्र के सहयोगी उसका जय-जयकार करते हुये उसे घर तक लाये। नागेन्द्र को लोगों ने इतने फूल हार पहिनाये कि वह मालाओं से लदा हुआ था। श्यामा, गोपी और तरुण सभी खुशी से फूले नहीं समाते थे। नागेन्द्र ने श्यामा का धन्यवाद देते हुये उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा।

"श्यामा! वास्तव में यह विजय तुम्हारी बदौलत ही हुई है। तुमने मेरे प्रति न केवल अपना कर्तव्य पूरा किया वरन् सदैव के लिये मुझे अपना आभारी बना लिया"

"ऐसा कहकर आप मुझे शर्मिन्दा न कीजिये"

अभी नागेन्द्र कुछ कहने ही वाला था कि गोपी ने बीच में बोलते हुये कहा।

"मम्मी! यह तो पापा ठीक कर रहे है कि पापा की जीत आप